सामान्य हिन्दी

अनेक शब्दों के एक शब्द

अनेक शब्दों के एक शब्द

- जो सबके अन्तःकारण की बात जानने वाला हो – अन्तर्यामी (MPPCS, RAS, UPPCS, IAS)
- जो पहले कभी न हुआ हो – अभूतपूर्व (IAS, RAS)
- जो शोक करने योग्य न हो – अशोक (UPPCS)
- जो खाने योग्य ने हो – अखाद्य (UPPCS)
- जो क्षीण न हो सके – अक्षय (RO)
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके – अथाह, अगाध (RAS, UPPCS)
- जो चिन्ता के योग्य न हो – अचिन्त्य, अचिन्तनीय (RAS)
- जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके – अगोचर, अतीन्द्रीय (IAS)
- जो वस्तु किसी दूसरे के पास रखी हो – अमानत (UPPCS)
- जो बीत चुका हो – अतीत (IAS)
- जो दिखायी न पड़े – अदृश्य, अप्रत्यक्ष (UPPCS, IAS)
- जो सदा से चला आ रहा है – अनवरत (IAS)
- जो कभी नहीं मरता – अमर्त्य, अमर (APO, RAS, IAS)
- जो आगे (दूर) की न सोचता हो – अदूरदर्शी (Upper Sub.)
- जो आगे (दूर) की सोंचता हो – अग्रसोची, दूरदर्शी (UPPCS)
- धरती (पृथ्वी) और आकाश के बीच का स्थान – अंतरिक्ष (UPPCS)
- जिसका कोई अर्थ न हो – अर्थहीन (UPPCS)
- जिस पर आक्रमण न किया गया हो – अनाक्रांत (UPPCS)
- जिसे जीता न जा सके – अजेय (UPPCS, Upper Sub., RO)
- बिना वेतन काम करने वाला – अवैतनिक (UPPCS, B.Ed., Low Sub.)
- जिसका जन्म पहले हुआ हो (बड़ा भाई) – अग्रज (RAS)
- दोपहर के बाद का समय – अपराह्न (IAS, Upper Sub., UPPCS)
- जो पराजित न किया जा सके – अपराजेय (UKPCS)
- अधिक बढ़ा-चढ़ा कर कहना – अतिशयोक्ति, अतियुक्ति (B.Ed.)
- जिसका परिहार (त्याग) न हो सके/जिसको छोड़ा न जा सके – अपरिहार्य (UPPCS, B.Ed., Low Sub.)
- जो कानून के प्रतिकूल हो/जो विधि के विरुद्ध हो – अवैध, अविधिक (UPPCS, IAS)
- जो समय पर न हो – असामयिक (UPPCS)

- जो अवश्य होने वाला हो – अवश्यम्भावी (APO, UPPCS)
- जिसका विवाह न हुआ हो – अविवाहित (IAS)
- जो सबके अन्तःकारण की बात जानने वाला हो – अन्तर्यामी (MPPCS)
- जिसका इलाज न हो सके – असाध्य (RO)
- किसी कार्य के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता – अनुदान (UKPCS)
- व्यर्थ/अनुचित खर्च करने वाला – अपव्ययी (RAS, UPPCS)
- जिसकी पहले से कोई आशा न हो – अप्रत्याशित (UPPCS, APO)
- पुरुष जो अभिनय करता हो – अभिनेता (MPPSC)
- जो भेदा या तोड़ा न जा सके – अभेद्य (Low Sub.)
- जिसका जन्म छोटी जाति (निचले वर्ण) में हुआ हो – अंत्यज (RO)
- जो अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो – अद्यःप्रसूत (UPPCS)
- जिसको क्षमा न किया जा सके – अक्षम्य (Low Sub.)
- जो न जाना जा सके – अज्ञेय (Upper Sub., UPPCS)
- जो कुछ न जानता हो – अज्ञ, अज्ञानी (UPPCS, B.Ed.)
- कम बोलने वाला – अल्पभाषी, मितभाषी (Low Sub., APO, UPPCS, RAS,)
- थोड़ा जानने वाला – अल्पज्ञ (RAS, MPPCS)
- जिसका कभी अन्त न हो – अनन्त (UPPCS, B.Ed.)
- जिसका माँ-बाप न हो – अनाथ (IAS, UPPCS)
- जिसके समान कोई दूसरा न हो – अद्वितीय (RAS, IAS, UPPCS)
- जिस पर मुकद्दमा चल रहा हो/ जिस पर अभियोग लगाया गया हो – अभियुक्त, अभियोगी (UPPCS, APO, IAS)
- जिसकी कोई सीमा न हो – असीम (IAS, UPPCS)
- जिसके आने की कोई तिथि न हो – अतिथि (IAS, UPPCS)
- जिसे भुलाया न जा सके – अविस्मृति (IAS)
- जिसकी उपमा न हो – अनुपम, अनुपमा (UPPCS, IAS)
- जिसे बुलाया न गया हो/जो बिना बुलाये आया हो – अनाहूत (IAS, UPPCS)
- जिसका वचन या वाणी द्वारा वर्णन न किया जा सके/जिसे वाणी व्यक्त न कर सके – अनिर्वचनीय, अवर्णनीय (IAS, UPPCS)
- जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सके – अकथनीय (UPPCS)
- जिसका निवारण न हो सकता हो – असाध्य (UPPCS, B.Ed.)
- जो अनुकरण करने योग्य हो – अनुकरणीय (APO)

- किसी के पीछे-पीछे चलने वाला/जो पीछे चलता हो – अनुचर, अनुगामी, अनुयायी (IAS, B.Ed.)
- जिस पर अनुग्रह किया गया हो – अनुगृहीत (UPPCS, B.Ed.)
- जो हिसाब किताब की जाँच करता हो – अंकेक्षक (MPPCS)
- रूप के अनुसार – अनुरूप (UPPCS)
- सोच-समझकर कार्य न करने वाला – अविवेकी (UPPCS, RAS)
- जो पहले कभी घटित न हुआ हो – अघटित (IAS)
- जिसकी परिभाषा देना संभव न हो – अपरिभाषित (IAS, B.Ed.)
- विकृत शब्द/बिगड़ा हुआ शब्द – अपभ्रंश (UPPCS)
- जो विश्वास करने योग्य (लायक) न हो – अविश्वासनीय (Low Sub.)
- जिसका किसी भी प्रकार उल्लंघन नहीं किया जा सके – अनुलंघनीय (Low Sub.)
- जो अभी तक न आया हो – अनागत (IAS, B.Ed.)
- मूल्य घटाने की क्रिया – अवमूल्यन (IAS, B.Ed.)
- अधिकार या कब्जे में आया हुआ – अधिकृत (UKPCS)
- जो पहले कभी नहीं सुना गया – अनुश्रुत (Low Sub.)
- जिसका जन्म अण्डे से हो – अण्डज (APO, B.Ed.)
- गुरु के समीप या साथ रहने वाला विद्यार्थी – अन्तेवासी (UPPCS, B.Ed.)
- जो व्यय न किया जा सके – अव्यय (Low Sub.)
- जिसका उत्तर न दिया गया हो – अनुत्तरित (Low Sub., UPPCS)
- जो बदला न जा सके – अपरिवर्तनीय (Low Sub.)
- जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाए – आगन्तुक (UPPCS, IAS)
- जो आदर करने योग्य हो – आदरणीय (IAS)
- आशा से अधिक/जिसकी आशा न की गई हो – आशातीत (Upper Sub., Low Sub.)
- आलोचना करने वाला – आलोचक (Upper Sub.)
- आदि से अन्त तक – आद्योपान्त, आद्यन्त (UPPCS, IAS)
- जो अपने पैरों पर खड़ा हो – आत्म-निर्भर (UPPCS)
- आभार मानने वाला – आभारी (RAS, UPPCS)
- जो किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण-दोष की आलोचना करता हो – आलोचक (Upper Sub.)
- वह कवि जो तत्काल/तत्क्षण कविता कर डालता हो – आशुकवि (UKPCS, UPPCS)
- जो स्वयं का मत मानने वाला हो – आत्मभिमत (UPPCS)
- जो ईश्वर को मानता हो – आस्तिक (MPPCS, Low Sub., UPPCS, BPSC, UKPCS)
- अतिथि की सेवा करने वाला – आतिथेयी (UKPCS)

- भगवान के सहारे अनिश्चित आय – आकाशवृत्ति (UKPCS)
- जो परम्परा से सुना हुआ हो – आनुश्राविक (UKPCS)
- जो इन्द्रियों को वश में कर ले – इन्द्रिय-निग्रहवान (Upper Sub.)

अन्य महत्वपूर्ण एक शब्दों के अनेक शब्द

1. जहाँ पहुँचा न जा सके – अगम, अगम्य
2. जिसे बहुत कम ज्ञान हो, थोड़ा जानने वाला – अल्पज्ञ
3. मास में एक बार आने वाला – मासिक
4. जिसके कोई संतान न हो – निस्संतान
5. जो कभी न मरे – अमर
6. जिसका आचरण अच्छा न हो – दुराचारी
7. पंद्रह दिन में एक बार होने वाला – पाक्षिक
8. अच्छे चरित्र वाला – सच्चरित्र
9. आज्ञा का पालन करने वाला – आज्ञाकारी
10. रोगी की चिकित्सा करने वाला – चिकित्सक
11. सत्य बोलने वाला – सत्यवादी
12. दूसरों पर उपकार करने वाला – उपकारी
13. जिसे कभी बुढ़ापा न आये – अजर
14. दया करने वाला – दयालु
15. जिसका आकार न हो – निराकार
16. जो आँखों के सामने हो – प्रत्यक्ष
17. जिसे देखकर डर (भय) लगे – डरावना, भयानक
18. जो स्थिर रहे – स्थावर
19. ज्ञान देने वाली – ज्ञानदा
20. भूत-वर्तमान-भविष्य को देखने (जानने) वाले – त्रिकालदर्शी
21. जानने की इच्छा रखने वाला – जिज्ञासु
22. जिसे क्षमा न किया जा सके – अक्षम्य
23. जिसका कोई मूल्य न हो – अमूल्य

24. जो वन में घूमता हो – वनचर
25. जो इस लोक से बाहर की बात हो – अलौकिक
26. जो इस लोक की बात हो – लौकिक
27. जिसके नीचे रेखा हो – रेखांकित
28. जिसका संबंध पश्चिम से हो – पाश्चात्य
29. जो स्थिर रहे – स्थावर
30. दुखांत नाटक – त्रासदी
31. जो क्षमा करने के योग्य हो – क्षम्य
32. हिंसा करने वाला – हिंसक
33. हित चाहने वाला – हितैषी
34. हाथ से लिखा हुआ – हस्तलिखित
35. सब कुछ जानने वाला – सर्वज्ञ
36. जो स्वयं पैदा हुआ हो – स्वयंभू
37. जो शरण में आया हो – शरणागत
38. जिसका वर्णन न किया जा सके – वर्णनातीत
39. फल-फूल खाने वाला – शाकाहारी
40. जिसकी पत्नी मर गई हो – विधुर
41. जिसका पति मर गया हो – विधवा
42. सौतेली माँ – विमाता
43. व्याकरण जाननेवाला – वैयाकरण
44. रचना करने वाला – रचयिता
45. खून से रँगा हुआ – रक्तरंजित
46. अत्यंत सुन्दर स्त्री – रूपसी
47. कीर्तिमान पुरुष – यशस्वी
48. कम खर्च करने वाला – मितव्ययी
49. मछली की तरह आँखों वाली – मीनाक्षी
50. मयूर की तरह आँखों वाली – मयूराक्षी
51. बच्चों के लिए काम की वस्तु – बालोपयोगी
52. जिसकी बहुत अधिक चर्चा हो – बहुचर्चित
53. जिस स्त्री के कभी संतान न हुई हो – वंध्या (बाँझ)
54. फेन से भरा हुआ – फेनिल

55. प्रिय बोलने वाली स्त्री – प्रियंवदा
56. जिसकी उपमा न हो – निरुपम
57. जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो – नवजात
58. जिसका कोई आधार न हो – निराधार
59. नगर में वास करने वाला – नागरिक
60. रात में घूमने वाला – निशाचर
61. ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला – नास्तिक
62. मांस न खाने वाला – निरामिष
63. बिलकुल बरबाद हो गया हो – ध्वस्त
64. जिसकी धर्म में निष्ठा हो – धर्मनिष्ठ
65. देखने योग्य – दर्शनीय
66. बहुत तेज चलने वाला – द्रुतगामी
67. जो किसी पक्ष में न हो – तटस्थ
68. तत्त्तव को जानने वाला – तत्त्तवज्ञ
69. तप करने वाला – तपस्वी
70. जो जन्म से अंधा हो – जन्मांध
71. जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो – जितेंद्रिय
72. चिंता में डूबा हुआ – चिंतित
73. जो बहुत समय कर ठहरे – चिरस्थायी
74. जिसकी चार भुजाएँ हों – चतुर्भुज
75. हाथ में चक्र धारण करनेवाला – चक्रपाणि
76. जिससे घृणा की जाए – घृणित
77. जिसे गुप्त रखा जाए – गोपनीय
78. गणित का ज्ञाता – गणितज्ञ
79. आकाश को चूमने वाला – गगनचुंबी
80. जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो – खंडित
81. आकाश में उड़ने वाला – नभचर
82. तेज बुद्धिवाला – कुशाग्रबुद्धि
83. कल्पना से परे हो – कल्पनातीत
84. जो उपकार मानता है – कृतज्ञ
85. किसी की हँसी उड़ाना – उपहास

86. ऊपर कहा हुआ – उपर्युक्त
87. ऊपर लिखा गया – उपरिलिखित
88. जिस पर उपकार किया गया हो – उपकृत
89. इतिहास का ज्ञाता – अतिहासज्ञ
90. आलोचना करने वाला – आलोचक
91. ईश्वर में आस्था रखने वाला – आस्तिक
92. बिना वेतन का – अवैतनिक
93. जो कहा न जा सके – अकथनीय
94. जो गिना न जा सके – अगणित
95. जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो – अजातशत्रु
96. जिसके समान कोई दूसरा न हो – अद्वितीय
97. जो परिचित न हो – अपरिचित
98. जिसकी कोई उपमा न हो – अनुपम

Q. No-(4)(अ)
(10) अंक

Qustion No (8)
(5) Mark
(Lower में सिर्फ उपसर्ग)

(अति सम अध उत कम कुश) **उपसर्ग एवं प्रत्यय** अना आई (कृत / कृदंत)
मय वाला (तद्धित)

उपसर्ग- उपसर्ग दो शब्दों से मिलकर बना है - उप + सर्ग
'उप' का अर्थ है - समीप
'सर्ग' का अर्थ है - सृष्टि
अर्थात समीप आकर सृष्टि करना
उपसर्ग किसी शब्द से पहले जुड़कर उसका अर्थ बदल देतें हैं। यह बदलाव तीन प्रकार का होता है :—
(i). प्रतिकूल अर्थ में - निडर, अपमान, कुख्यात, दुश्चरित्र
(ii). नई विशेषता - प्रहार, उपदेश, उपहार
(iii). तेजी लाना - प्रबल, परिभ्रमण, अत्यधिक, अतिवृष्टि
जहाँ संस्कृत में उपसर्गों की संख्या 19 उर्दू में 12 हैं वहीं हिन्दी में 10 हैं। कुछ प्रमुख उपसर्ग निम्न हैं :—

संस्कृत के उपसर्ग :- (19) अति, सम, उत, प्रति, निर, निस, दुर, दुस, अप, परा, आ, सु, वि, प्र, नि

अति - अत्यन्त, अत्यल्प, अत्याचार, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अतीत
सम - संतोष, संवेदना, संगीत, संहार, संभव, संगम, संदेह, संवृद्धि
उत - इसके कई रूप होतें हैं :—
त का द - उद्गम, उद्भव, उद्घाटन, उद्देश्य
(जल्दी-जल्दी) त का ल - उल्लास, उल्लेख, उल्लंघन
त का ज - उज्ज्वल
त का न - उन्नति, उन्नायक,
त का च - उच्चारण, उच्चाटन, उच्छ्वास
प्रति - प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिक्रिया, प्रतिलिपि, प्रत्याशा, प्रत्यारोपण
निर - निरोग, निर्माण, निर्जीव, निर्दय, निर्यात, निर्वाह
निस - निस्तेज, निष्पक्ष, निष्फल, निष्ठुर
दुर - दुर्घटना, दुर्दिन, दुर्बोध, दुर्दशा, दुर्लभ, दुराचार
दुस - दुस्साहस, दुश्चरित्र, दुष्कर्म, दुष्प्रभाव

अप - अपमान, अपमार्ग, अपव्यय, अपहरण, अपराध, अपकार
परा - पराजय, परामर्श, पराकाष्ठा, पराक्रम
आ - आगमन, आजीवन, आरक्षण, आमरण, आभूषण, आचरण
सु - सुगम, सुगन्ध, सुरक्षा, सुदृढ़, सुवास, सुलेख
स्वागत (सु + आ + गत)
वि - विजेता, विज्ञान, विरोध, विदेश, विफल, विमुख, विधम
प्र - प्रबल, प्रयोग, प्रक्षिप्त, प्रचार, प्रदोष, प्रकोप, प्रेरणा (स्वरादि)
नि - निबंध, निवास, निरोध, निषेध, निकृष्ट, न्यास, निद्रा

हिन्दी के उपसर्ग :- (10) अध, उन, नि, भर, कु, सु

अध - अधखिला, अधमरा, अधपका
उन - (एक कम बताने वाला उपसर्ग)
उनतीस, उनचालीस, उनसठ, उन्यासी, उनहत्तर
नि - निडर, निठल्ला, निकम्मा, निश्चय, निष्ठा, न्यास (तत्सम), निद्रा
भर - भरसक, भरपूर, भरपेट
कु - कुसंग, कुपुत्र, कुबोल, कुचैल
सु - सुपुत्र, सुजान, सुडौल

उर्दू के उपसर्ग :- (12) कम, खुश, ना, ला, बद, बे, सर, हम

कम - कमबख्त, कमजोर,
खुश - खुशबू, खुशहाल, खुशखबरी, खुशमिजाज
ना - नादान, नाबालिक, नालायक
ला - लापरवाह, लावारिस, लाइलाज
बद - बदनाम, बदचलन, बदतमीज, बदहवास
बे - बेशर्म, बेइमान, बेरहम, बेकसूर, बेइज्जत
सर - सरदार, सरकार, सरपंच, सरताज
हम - हमराज, हमदर्द, हमसाया

Note: कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें एक से अधिक उपसर्ग होते हैं, जैसे :—

स्वागत = सु + आ + गत

उपाध्यक्ष = उप + अधि + अक्ष

व्यवस्था = वि + अव + स्था

Note: उपसर्ग पहिचानने के लिए –

व - वि	रू - र्	अत - अति	अंत - अन्त:
न - नि	सं - सम	अभ - अभि	अधो - अध:
प - श्		प्रत - प्रति	तद् - तत्
		दुर - दु:	दुरू - दुर
		उल / उद / उन / उच / उट - उत्	पुन - पुन:
			बिन - बहु

भाषा में उपसर्ग का महत्व :–

(I). उपसर्ग नये शब्द बनाने में सहयोग करते हैं।

(ii). भाषा की शब्दावली बढ़ती है।

(iii). विलोम शब्द बनाने में उपसर्ग काफी महत्वपूर्ण होते हैं।

(iv) उपसर्ग शब्द के अर्थ ही नहीं बदलते बल्कि उनमें एक नई विशेषता भी लाते हैं जैसे - ख्यात व प्रख्यात शब्दों के अर्थ में कोई अन्तर नहीं है लेकिन प्रख्यात शब्द कहने से एक नई विशेषता दिखने लगती है।

अ - कौशल्य, गौरव, पौरुष, शैव, दैव
ई - अनुभवी, उपयोगी, लोभी, विरागी, विरोधी, सहयोगी
त - एकत्र, अनेकत्र, सर्वत्र, अन्यत्र
ता - अधिकता, महानता, प्राचीनता, नवीनता, विशेषता, कुशलता, मुर्खता

हिन्दी के प्रत्यय :-

कृत प्रत्यय :- (आ), (ऊ), (आई), (आहट), (आवट)

आ - घेरा, झूला, ठेला, झगड़ा, लपेटा
ऊ - मारू, खाऊ, लड़ाकू, बिगाड़ू, लगरू
आई - पढाई, चढ़ाई, खुदाई, जुताई, कमाई, बनवाई, धुलाई
आहट - घबराहट, चिल्लाहट, लड़खड़ाहट, जगमगाहट
आवट - रुकावट, बनावट, थकावट, रुकावट

तद्धित प्रत्यय :- (आ), (ई), (आहट), (आवट), (इत), (इया), (वाला), (ऐरा), (हारा)

आ - भूखा, प्यासा, प्यारा, मैला, जोड़ा, बोझा
ई - खेती, किसानी, चोरी, रखवारी, डाक्टरी
आहट - चिकनाहट, कड़ुवाहट, घबराहट
इया - रसोइया, भोजपुरिया, बम्बईया, गड़ेरिया
वाला - दूधवाला, सब्जीवाला, चायवाला, कारवाला, चलनेवाला
ऐरा - चचेरा, ममेरा, फुफेरा
हारा - लकड़हारा, चूड़ीहारा

उर्दू के प्रत्यय :- (खाना), (दान), (दार), (नाक), (बाज)

खाना - गुसलखाना, पागलखाना, कैदखाना, मयखाना, दवाखाना
दान - पायदान, इत्रदान, कुड़ादान, फूलदान, खानदान, रक्तदान
दार - दुकानदार, हवादार, मालदार, इज्जतदार
नाक - खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
बाज - चालबाज, सौदेबाज, लड़ाकबाज

उपसर्ग तथा प्रत्यय में समानता :- उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों

(i) नये शब्दो का निर्माण करते हैं

(ii) भाषा को समृद्ध तथा शब्दभण्डार बढ़ाते हैं

उपसर्ग तथा प्रत्यय में अन्तर :-

क्र० सं०	उपसर्ग	प्रत्यय
1.	उपसर्ग मूल शब्द से पूर्व लगते हैं।	प्रत्यय मूल शब्द के बाद लगते हैं।
2.	उपसर्ग जुड़ने पर अर्थ विपरित, नई विशेषता आदि हो सकता है।	प्रत्यय जुड़ने पर मूल शब्द के अर्थ से समन्वित ही अर्थ देते हैं।
3.	मूल शब्द उपसर्ग पर निर्भर करते हैं	मूल शब्द पर प्रत्यय निर्भर करते हैं।
4.	उपसर्ग मूल शब्द को निर्देशित करता है	प्रत्यय मूल शब्द से निर्देशित होता है।
5.	अधिकांश उपसर्गों का अपना स्वतंत्र अर्थ होता है।	अपवाद स्वरूप ही किसी प्रत्यय का स्वतंत्र अर्थ होता है
6.	उपसर्ग बहुदिशा गामी होते हैं तथा इनका प्रयोग अपेक्षाकृत कठिन होता है।	प्रत्यय एक रेखीय होते हैं तथा इनका प्रयोग आसान होता है।
7.	उपसर्ग अपेक्षाकृत प्रबुद्ध समाज में अधिक प्रयुक्त होता है	अपेक्षाकृत सरल समाज में अधिक प्रयुक्त होता है।
8.	उद्भव व विकास की दिशा ऊपर से नीचे की ओर होता है।	उद्भव व विकास नीचे से ऊपर की होता है।

उपसर्ग :- (अति, सम ⇒ अध; उन ⇒ कम; खुश)

संस्कृत - अति, सम, उत, प्रति
निर, निस, दुर, दुस, अप, परा
आ, सु, वि, प्र, नि

हिन्दी - अध, उन, नि, भर, कु, सु

उर्दू - कम, खुश, ना, ला, बद, बे, सर, हम

प्रत्यय : (कृत - अना, आई, तद्धित - मय, वाला)

संस्कृत - कृत् - अन, अना, अनीय, अक, तव्य, आ, य, त
तद्धित - मय, मान, वान्, वर्ती, वत्, अ, ई, एरा, रा

हिन्दी - कृत् - आ, ऊ, आई, आहट, आवट
तद्धित - आ, ई, आहट, आवट, इत, इया, वाला
एरा, हारा

उर्दू - खाना, दान, दार, नाक, बाज

कृत प्रत्यय

- अन - पठन, कथन
- अना - पढना, लिखना
- अनीय - पठनीय, कथनीय
- अक - पाठक, दर्शक
- तव्य - वक्तव्य, कर्तव्य
- आई - पढाई, लिखाई
- आहट - घबराहट, चिल्लाहट
- आवट - सजावट, बनावट

तद्धित प्रत्यय

- मय - शांतिमय, आनन्दमय
- मान् - बुद्धिमान्, शक्तिमान्
- वान् - धनवान्, बलवान्
- वर्ती - अनुवर्ती, सीमावर्ती
- वत् - पुत्रवत्, पितृवत्
- वाला - दूधवाला, चायवाला
- एरा - चन्चेरा, ममेरा
- हारा - लकड़हारा, चूड़ीहारा

उपसर्ग :- (अति,सम ⇒ अध,उन ⇒ कम,खुश)

संस्कृत - अति, सम, उत, प्रति
निर, निस, दुर, दुस, अप, परा
आ, सु, वि, प्र, नि

हिन्दी - अध, उन, नि, भर, कु, सु

उर्दू - कम, खुश, ना, ला, बद, बे, सर, हम

प्रत्यय :- (कृत - अना,आई, तद्धित - मय,वाला)

संस्कृत - कृत - अन, अना, अनीय, अक, तव्य, आ, य, त
तद्धित - मय, मान, वान, वर्ती, वत, अ, ई, य, ग

हिन्दी - कृत - आ, ऊ, आई, आहट, आवट
तद्धित - आ, ई, आहट, आवट, इल, इया, वाला
एरा, हारा

उर्दू - खाना, दान, दार, नाक, बाज

कृत प्रत्यय	तद्धित प्रत्यय
अन - पठन, कथन	मय - शांतिमय, आनन्दमय
अना - पढना, लिखना	मान् - बुद्धिमान्, शक्तिमान्
अनीय - पठनीय, कथनीय	वान् - धनवान्, बलवान्
अक - पाठक, दर्शक	वर्ती - अनुवर्ती, सीमावर्ती
तव्य - वक्तव्य, कर्तव्य	वत् - पुत्रवत्, पितृवत्
आई - पढाई, लिखाई	वाला - दूधवाला, चायवाला
आहट - घबराहट, चिल्लाहट	एरा - चचेरा, ममेरा
आवट - सजावट, बनावट	हारा - लकड़हारा, चूड़ीहारा

—: उपसर्ग :—

➤ उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है — किसी शब्द के समीप आ कर नया शब्द बनाना।

➤ जो शब्दांश शब्दों के आदि में जुड़ कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

'हार' शब्द का अर्थ है पराजय। परंतु इसी शब्द के आगे 'प्र' शब्दांश को जोड़ने से नया शब्द बनेगा — 'प्रहार' (प्र-हार) जिसका अर्थ है चोट करना। इसी तरह 'आ' जोड़ने से आहार (भोजन), 'सम्' जोड़ने से संहार (विनाश) तथा 'वि' जोड़ने से 'विहार' (घूमना) इत्यादि शब्द बन जाएँगे।

➤ उपर्युक्त उदाहरण में 'प्र', 'आ', 'सम्' और 'वि' का अलग से कोई अर्थ नहीं है, परंतु 'हार' शब्द के आदि में जुड़ने से उसके अर्थ में इन्होंने परिवर्तन कर दिया है। इसका मतलब हुआ कि ये सभी शब्दांश हैं और ऐसे शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं।

हिन्दी में प्रचलित उपसर्गों को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है —

1- संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग,
3. उर्दू और फारसी के उपसर्ग,
4. अंग्रेजी के उपसर्ग
5. उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

1- संस्कृत के उपसर्ग :—

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अति	अधिक	अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति, अधिनायक
अनु	पीछे, समान	अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन
अप	बुरा, हीन	अपयश, अपमान, अपकार
अभि	सामने, चारों ओर, पास	अभियान, अभिषेक, अभिनय, अभिमुख
अव	हीन, नीच	अवगुण, अवनति, अवतार, अवतरण
आ	तक, समेत	आजीवन, आगमन, आरक्षण, आक्रमण

उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर	उद्गम, उत्कर्ष, आम, उत्पत्ति
उप	निकट, सदृश, गौण	उपदेश, उपवन, उपमंत्री, उपहार
दुर	बुरा, कठिन	दुर्जन, दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार
दुस्	बुरा, कठिन	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुष्कर
निर्	बिना, बाहर, निषेध	निरपराध, निर्जन, निराकार, निर्गुण
निस्	रहित, पूरा, विपरीत	निस्सार, निस्तार, निश्चल, निश्चित
नि	निषेध, अधिकता, नीचे	निवारण, निपात, नियोग, निषेध
परा	उल्टा, पीछे	पराजय, पराभव, परामर्श, पराक्रम
परि	आसपास, चारों तरफ	परिजन, परिक्रम, परिपूर्ण, परिमाण
प्र	अधिक, आगे	प्रख्यात, प्रबल, प्रधान, प्रकृति
प्रति	उलटा, सामने, हर एक	प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक
वि	भिन्न, विशेष	विदेश, विलाप, वियोग, विपक्ष

2. हिन्दी के उपसर्ग :—

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	अभाव, निषेध	अछूता, अथाह, अटल
अन	अभाव, निषेध	अनमोल, अनबन, अनपढ़
कु	बुरा	कुचाल, कुचैला, कुचक्र
दु	कम, बुरा	दुबला, दुलारा, दुधारू
नि	कमी	निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघर, औसर, औसान
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार
सु	अच्छा	सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
अध	आधा	अधपका, अधकच्चा, अधमरा, अधकचरा
उन	एक कम	उनतीस, उनचालीस, उनसठ, उनहत्तर
पर	दूसरा, बाद का	परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
बिन	बिना, निषेध	बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

3. अरबी-फारसी के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
कम	थोड़ा, हीन	कमजोर, कमबख्त, कमअक्ल
खुश	अच्छा	खुशनसीब, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क, गैरजिम्मेदार
ना	अभाव	नापसंद, नासमझ, नाराज, नालायक
ब	और, अनुसार	बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
बा	सहित	बाकायदा, बाइज्जत, बाअदब, बामौका
बद	बुरा	बदमाश, बदनाम, बदकिस्मत, बदबू
बे	बिना	बेईमान, बेइज्जत, बेचारा, बेवकूफ
बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक
ला	रहित	लापरवाह, लाचार, लावारिस, लाजवाब
सर	मुख्य	सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार
हम	समान, साथवाला	हमदर्दी, हमराह, हमउम्र, हमदम
हर	प्रत्येक	हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार

4. अंग्रेजी के उपसर्ग :

हेड	मुख्य	हेडमास्टर, हेडक्लर्क
सब	अधीन, नीचे	सब-इंस्पेक्टर, सब-कमेटी, सब-जज
डिप्टी	सहायक	डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर
वाइस	सहायक	वाइसराय, वाइस-चांसलर
जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी
चीफ	प्रमुख	चीफ-मिनिस्टर, चीफ-इंजीनियर

5. उपसर्ग के समान प्रयुक्त होनेवाले संस्कृत के अव्यय हैं :-

अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुखी
अंतः	भीतरी	अंतःकरण, अंतःपुर, अंतर्मन, अंतर्देशीय
अ	अभाव	अशोक, अकाल, अनीति
चिर	बहुत देर	चिरंजीवी, चिरकुमार, चिरकाल, चिरायु
पुनर्	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्लेखन, पुनर्जीवन
बहिर्	बाहर	बहिर्गमन, बहिष्कार
सत्	सच्चा	सज्जन, सत्कर्म, सदाचार, सत्कार्य
पुरा	पुरातन	पुरातत्व, पुरावृत्त
सम	समान	समकालीन, समदर्शी, समकोण, समकालिक
सह	साथ	सहकार, सहपाठी, सहयोगी, सहचर

शब्द-रचना :

वर्णों के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते हैं।

➤ यौगिक शब्दों की रचना तीन प्रकार से होती है —

उपसर्ग से : अति + अंत = अत्यन्त

अति → उपसर्ग, अंत → मूल/शब्द/धातु, अत्यन्त → यौगिक शब्द

प्रत्यय से : लेन + दार = लेनदार

लेन → मूलशब्द, दार → प्रत्यय, लेनदार → यौगिक शब्द

समास से : प्रति + दिन = प्रतिदिन

प्रति → शब्द, दिन → शब्द, प्रतिदिन → यौगिक शब्द

➤ कभी-कभी एक ही मूल शब्द में उपसर्ग एवं प्रत्यय दोनों का प्रयोग होता है; जैसे —

स्व + तन्त्र + ता = स्वतन्त्रता

स्व → उपसर्ग, तन्त्र → मूलशब्द, ता → प्रत्यय

✱ कभी-कभी दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग किया जाता है; जैसे —

समझ + दार + ई = समझदारी

समझ → मूलशब्द, दार → प्रत्यय, ई → प्रत्यय

प्रत्यय

⇒ प्रत्यय = प्रति (साथ में पर बाद में) + अय (चलनेवाला) शब्द का अर्थ है पीछे चलना।

⇒ जो शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं जैसे —

दयालु = दया शब्द के अन्त में आलु जुड़ने से अर्थ में विशेषता आ गई है। अतः यहाँ 'आलु' शब्दांश प्रत्यय है।

⇒ प्रत्ययों का अपना अर्थ कुछ भी नहीं होता और न ही इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से किया जाता है।

⇒ प्रत्यय के दो भेद हैं — 1- कृत् प्रत्यय 2- तद्धित प्रत्यय

⇒ वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त (कृत + अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे - लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत प्रत्यय है तथा लेखक कृदन्त शब्द है।

⇒ वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों — संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण — में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे — सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय है तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

1- कृत प्रत्यय ⇒

प्रत्यय	मूल शब्द/धातु	उदाहरण
अक	लेख्, पाठ्, कृ, गै	लेखक, पाठक, कारक, गायक
अन	पाल्, सह्, गै, चर्	पालन, सहन, गमन, चरण
अना	घट्, तुल्, वन्द्, विद्	घटना, तुलना, वन्दना, वेदना
आई	लड़, सिल, पढ़, चढ़	लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई
इ	हर, गिर, दशरथ, माला	हरि, गिरि, दशरथि, माली
ई	हँस, बोल, त्याग्, रेत	हँसी, बोली, त्यागी, रेती
उक	इच्छ्, भिक्ष्	इच्छुक, भिक्षुक
तव्य	कृ, वच्	कर्तव्य, वक्तव्य
ति	अ, प्री, शक्, भज	अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति
ते	जा, खा	जाते, खाते
त्र	अन्य, सर्व, अस्	अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र
न	क्रंद, बंद, मंद, खिद्, ले, बेल	क्रंदन, बंदन, मंदन, खिन्न, बेलन, लेन
ना	पढ़, लिख, बोल	पढ़ना, लिखना, बोलना
मा	दा, धा	दाम, धाम
य	गद्, पद्, कृ	गद्य, पद्य, कृत्य
या	मृग, विद्	मृगया, विद्या
रु	गै	गेरु
वाला	देना, आना	देनेवाला, आनेवाला
ऐया/ वैया	रख, बाच, डाट, गा / खा	रखैया, बचैया, डटैया, गवैया / खवैया
हार	होना, रखना, खेलना	होनहार, रखनहार, खेलनहार

2- तद्धित प्रत्यय ⇒

प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
आइ	पछताना, जागना	पछताइ, जगाइ

आइन	पण्डित, ठाकुर, लड़	पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई
आई	चतुर, चौड़ा	चतुराई, चौड़ाई
आनी	सेठ, नौकर, मथ	सेठानी, नौकरानी, मथानी
आयत	बहुत, पंच, अपना	बहुतायत, पंचायत, अपनायत
आहट	चिकना, घबरा, चिल्ल	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट
इल	फेन, कूट, तन्द्रा, जटा	फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल
इष्ठ	कन, वर, गुरु, बल	कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ
ई	सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत	सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती
ए	बच्चा, लेखा, लड़का	बच्चे, लेखे, लड़के
एय	अतिथि, अग्नि	आतिथेय, आग्नेय
एल	फूल, नाक	फूलेल, नकेल
एरा	सामा, लुट	समेरा, लुटेरा
ओला	खाट, पाट, सँप	खटोला, पटोला, सँपोला
औती	बाप, ठाकुर, मान	बपौती, ठकरौती, मनौती
क	धाम, चाम, बैठ	धामक, चामक, बैठक
जा	भ्राता, दो	भतीजा, दूजा
कर	विशेष, खास	विशेषकर, खासकर
ड़ा, ड़ी	चाम, बाघ, पंख, टाँग	चमड़ा, बघड़ा, पंखड़ी, टँगड़ी
त	रँग, संग, खाप	रँगत, संगत, खापत

तत्सम

वे शब्द जो संस्कृत से सीधे आये हो और आज भी उसी रूप मे प्रयोग किये जा रहे हैं।

जैसे – अग्नि, सूर्य, वायु, पत्र।

तद्भव

संस्कृत शब्दों से परिवर्तित होकर बने वे शब्द जो प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी से गुजरने के नया रूप ले लेते है, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

जैसे – कम्पनी इत्यादि।

नियम नं. 1

'क्ष' शब्द का प्रयोग अधिकतर तत्सम शब्दों में होता है।

जैसे – क्षात्र का नक्षत्र, ईक्ष का ईख, अक्षि-आँख, अक्षवाट-

Note – 'क्ष' तद्भव मे बदलता है 'ख' होजाता है। अखाड़ा।

नियम न०. 2

'व' का 'ब' होना।

तत्सम शब्दों में जहां 'व' होता है वह तद्भव में 'ब' हो जाता है।

जैसे → वानिक का बनिया, वर्षा - बरसात, विवाह - ब्याह, वानर - बन्दर इत्यादि।

नियम न०. 3

'श' - 'स' होना।

जैसे → श्यामल का सांवला, श्वसुर का ससुर, शाक का साग, शीतल का सीतल।

नियम न०. 4

'ह्म' का प्रयोग अधिकतर तत्सम शब्दों में होता है।

जैसे - शृंगार, शृंग का सींग, शृंगाल का सियार

नियम न0. 5

तत्सम शब्दों में त्र तद्भव में जाकर त्त हो जाता है।

जैसे → सूत्र का सूत, पुत्र का पूत, कुपुत्र का कुपूत, पत्र का पता, नक्षत्र का नखत।

सामान्य हिन्दी

6. लिँग एवं वचन

लिँग

जो संज्ञा शब्द पुरुष या स्त्री जाति का ज्ञान कराते हैँ, उन शब्द रूपोँ को लिँग कहते हैँ। हिन्दी मेँ कुछ शब्दोँ को छोड़कर शेष सभी शब्द या तो पुरुषवाचक हैँ या स्त्री वाचक। इसलिए हिन्दी भाषा मेँ लिँग के दो प्रकार माने गये हैँ –
1. पुल्लिँग : पुरुष या नर जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिँग कहलाते हैँ। जैसे – लड़का, रमेश, मोर, देश, बकरा, बन्दर, भवन, साला, भाई आदि।
2. स्त्रीलिँग : स्त्री या नारी (मादा) जाति का बोध कराने वाले शब्दोँ को स्त्रीलिँग कहते हैँ। जैसे – लड़की, सीमा, बालिका, शेरनी, राधा, दासी, देवरानी, चिड़िया, भाभी, छात्रा आदि।

हिन्दी भाषा मेँ कई ऐसे भी शब्द हैँ जो पुल्लिँग एवं स्त्रीलिँग दोनोँ रूपोँ मेँ अपरिवर्तित रहते हैँ। इन शब्दोँ का लिँग परिवर्तन नहीँ होता। जैसे – चांसलर, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राजदूत, राज्यपाल, इंजीनियर, डॉक्टर, मैनेजर, डाकिया आदि। ऐसे शब्दोँ को उभयलिँगी कहते हैँ। उदाहरणार्थ –
• हमारे देश के प्रधानमंत्री कल जापान यात्रा पर जा रहे हैँ।
• जर्मनी की चांसलर एंजिला मर्केल ने सुरक्षा परिषद् मेँ भारत की स्थाई सदस्यता का समर्थन किया है।
• डॉक्टर हॉस्पिटल जा रहे हैँ।
• डॉक्टर मेरी माताजी को देखने घर पर आ रही है।

• लिँग निर्धारण सम्बन्धी नियम :
◊ पुल्लिँग शब्द –
• दिनोँ (वार) के नाम पुल्लिँग होते हैँ – सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार।
• महीनोँ के नाम – चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ व फाल्गुन। किन्तु अँग्रेजी मास मेँ जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई अपवाद हैँ यानि ये स्त्रीलिँग हैँ।
• रत्नोँ के नाम – हीरा, पन्ना, मोती, नीलम, मूँगा, पुखराज। किँतु सीपी, रत्ती व मणि अपवाद स्वरूप स्त्रीलिँग हैँ।
• द्रव पदार्थ – रक्त, घी, पैट्रोल, डीजल, तेल, पानी।
• धातुओँ के नाम – सोना, पीतल, लोहा, ताँबा। किँतु अपवाद स्वरूप चाँदी स्त्रीलिँग है।
• प्राणिजगत् मेँ – कौआ, मेँढ़क, खरगोश, भेड़िया, उल्लू, तोता, खटमल, पक्षी, पशु, जीवन, प्राणी।
• वृक्षोँ के नाम – नीम, पीपल, जामुन, बड़, गुलमोहर, अशोक, आम, कदम्ब, देवदार, चीड़, रोहिड़ा आदि।
• पर्वतोँ के नाम – कैलाश, अरावली, हिमालय, विँध्याचल, सतपुड़ा आदि।
• अनाजोँ के नाम – गेहूँ, बाजरा, चावल, मूँग आदि शब्द पुल्लिँग हैँ किँतु अपवाद स्वरूप मक्का, ज्वार, अरहर, रागी आदि स्त्रीलिँग हैँ।
• ग्रहोँ के नाम – रवि, चंद्र, सूर्य, ध्रुव, मंगल, शनि, बृहस्पति। किँतु 'पृथ्वी' शब्द अपवाद स्वरूप स्त्रीलिँग है।
• शरीर के अंग – पैर, पेट, गला, मस्तक, अँगूठा, मस्तिष्क, हृदय, सिर, हाथ, दाँत, होँठ, कंधा, वक्ष, बाल, कान, मुख, दिल, दिमाग आदि।
• वर्णमाला के अक्षर – स्वरोँ मेँ इ, ई, ऋ, ए तथा ऐ को छोड़कर सभी वर्ण पुल्लिँग हैँ।
• समुद्रोँ के नाम – प्रशांत महासागर, अंध महासागर, अरब सागर, हिन्द महासागर, लाल सागर, भूमध्य सागर आदि।
• विशिष्ट स्थान – वाचनालय, शिवालय, भोजनालय, चिकित्सालय, मंदिर, भंडारघर, स्नानघर, रसोईघर, शयनगृह, सभाभवन, न्यायालय, परीक्षा-केन्द्र, मंत्रालय, विद्यालय, सचिवालय, कार्यालय, पुस्तकालय, प्रसारण-केन्द्र आदि।
• व्यवसाय सूचक शब्द – उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, कर्मचारी, अधिकारी, व्यापारी, सचिव, आयुक्त, राज्यपाल, उद्योगपति, दुकानदार, क्रेता, विक्रेता, देनदार, लेनदार, सेठ, श्रेष्ठी, सैनिक, सुनार, सेनापति, संवाददाता, लोकपाल, लेखपाल, अधिवक्ता, विभागाध्यक्ष, चपरासी, न्यायाधीश, वकील आदि।
• समुदायवाचक शब्द – समाज, दल, संघ, गुच्छा, मंडल, सम्मेलन, परिवार, कुटुम्ब, वंश, कुल, झुण्ड आदि।
• भाववाचक संज्ञाएँ – आ, आव, आवा, पन, हा, वट, ना प्रत्ययोँ से युक्त भाववाचक संज्ञा–शब्द। जैसे– बाबा, बहाव, दिखावा, पहनावा, मोटापा, बुढ़ापा, बचपन, सीधापन, कवित्व, स्वामित्व, महत्त्व, दिखावट आदि।
• संस्कृत–शब्द (तत्सम शब्द) पुल्लिँग हैँ। जैसे – दास, अनुचर, मानव, दानव, देव, मनुष्य, राजा, ऋषि, मधु, पुष्प, पत्र, फल, गृह, दीपक, मन, डर, मित्र, कुल, वंश आदि।
• जिन शब्दोँ के अन्त मेँ 'त्र' जुड़ा हो।जैसे– नेत्र, पात्र, चरित्र, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र आदि।
• जिन शब्दोँ के अन्त मेँ 'ख' अथवा 'ज' होता है। जैसे– मुख, दुःख, लेख, पंकज, मनुज, अनुज, जलज आदि।
• आकार–प्रकार, देखने मेँ भारी–भरकम, विशाल और बेडौल वस्तुएँ पुल्लिँग होती हैँ। जैसे– ट्रक, इंजन, बोरा, खम्भा, स्तम्भ, गड्ढा आदि।
• अकारांत और आकारांत शब्द पुल्लिँग होते हैँ। जैसे– जंगल, कपड़ा, धन, वस्त्र, छिलका, भोजन, बर्तन, घड़ा, मटका, कलश, घट, पट आदि।
• एरा, दान, वाला, खाना, बाज, वान तथा शील प्रत्यय वाले शब्द पुल्लिँग होते हैँ। जैसे–
सपेरा, लुटेरा, चचेरा, ममेरा, फुफेरा आदि।
फूलदान, खानदान, पानदान, कमलदान, रोशनदान आदि।
दूधवाला, पानवाला, घरवाला, मिठाईवाला आदि।
कारखाना, जेलखाना, पागलखाना, डाकखाना, दवाखाना आदि।
चालबाज, दगाबाज, धोखेबाज, नशेबाज, नखरेबाज आदि।
धनवान, गुणवान, बलवान, चरित्रवान, भाग्यवान, दयावान आदि।
सुशील, अध्ययनशील, प्रगतिशील, उन्नतिशील आदि।
• 'अर्थी' तथा 'दाता' प्रत्यय युक्त शब्द पुल्लिँग होते हैँ। जैसे– अभ्यर्थी, स्वार्थी, परमार्थी, विद्यार्थी, शरणार्थी, पुरुषार्थी, मतदाता, श्रमदाता, रक्तदाता आदि।

◊ स्त्रीलिँग – सामान्यतः निम्न शब्द स्त्रीलिँग होते हैँ –
• लिपियोँ के नाम – देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, शारदा, खरोष्ठी, मुढ़िया आदि।
• नदियोँ के नाम – गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, कृष्णा, सतलज, ताप्ती, रावी, चंबल, गंडक, झेलम, चिनाव, ब्रह्मपुत्र, काटली, खारी, बांडी आदि।
• भाषाओँ के नाम – हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी, अँग्रेजी, तमिल, जर्मन, मराठी, गुजराती, मलयालम, बांगला, राजस्थानी आदि।
• तिथियोँ के नाम – प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, अमावस्या, पूर्णिमा, प्रतिपदा आदि।
• बेलोँ के नाम – जूही, चमेली, मल्लिका, मधुमति आदि।
• प्राणियोँ मेँ – कोयल, चील, मैना, मछली, गिलहरी, छिपकली, मक्खी आदि स्त्रीलिँग शब्द हैँ। इन शब्दोँ के पूर्व नर शब्द जोड़ देने से ये शब्द पुल्लिँग बन जाते हैँ, जैसे – नर मछली, नर मैना आदि।
• वर्णमाला के अक्षर – इ, ई, ऋ आदि स्त्रीलिँग हैँ।
• संस्कृत की इकारान्त संज्ञाएँ – अवनति, उन्नति, मति, तिथि, गति, अग्नि, हानि, रीति, समिति, शांति, नीति, शक्ति, संधि, जति आदि।
• संस्कृत की उकारान्त संज्ञाएँ – माला, माया, यात्रा, शोभा, क्रिया, लता, विद्या, घृणा, दया, पिपासा, कृपा, हिँसा, प्रतिभा, प्रतिमा, प्रतिज्ञा, आज्ञा, सरिता, क्रीड़ा, ध्वजा, लालसा,

जरा, मृत्यु, आयु, ऋतु, वायु, धातु आदि।
• शरीर के अंग – आँख, नाक, ठोड़ी, नाभि, भौं, पलक, छाती, कमर, एड़ी, चोटी, जीभ, पसली, पिंडली, अँगुली आदि।
• हथियारों में – तलवार, कटार, तोप, बंदूक, गोली, गदा, कृपाण आदि शब्द स्त्रीलिँग हैं किन्तु धनुष, बाण, बम पुल्लिँग हैं।
• समुदायों में – संसद, परिषद्, सभा, समिति, सेना, भीड़, टोली, रैली, सरकार स्त्रीलिँग शब्द हैं।
• नक्षत्रों के नाम – भरणी, कृतिका, रोहिणी आदि। किन्तु पुनर्वसु, पुष्य, तारा आदि पुल्लिँग हैं।
• भोजन–मसालों के नाम – पूरी, रोटी, सब्जी, जलेबी, मिर्ची, हल्दी आदि।
• जिन शब्दों के अन्त में इ, नी, आनी, आई, इया, इमा, त, ता, आस, री, आवट, आहट जुड़े होते हैं वे प्रायः स्त्रीलिँग शब्द होते हैं। जैसे–
ई– गर्मी, सर्दी, झिड़की, खिड़की, गाली, आबादी।
नी– कथनी, करनी, भरनी, जवानी, जननी, चटनी, छलनी।
आई– मलाई, बुराई, चटाई, पढ़ाई, लड़ाई, सफाई, विदाई, कमाई आदि।
इया– बुढ़िया, चिड़िया, कुटिया, गुड़िया आदि।
इमा– कालिमा, नीलिमा, महिमा, गरिमा आदि।
त– रंगत, संगत, खपत, चाहत आदि।
ता– एकता, कटुता, पशुता, मनुष्यता, महानता, नीचता, श्रेष्ठता, लघुता, ज्येष्ठता, मानवता, दानवता आदि।
आस– खटास, मिठास, भड़ास आदि।
री– बकरी, गठरी, कबूतरी, चकरी आदि।
आवट– बनावट, सजावट, लिखावट, थकावट, दिखावट आदि।
आहट– मुस्कराहट, चिकनाहट, घबराहट आदि।

◊ पुल्लिँग से स्त्रीलिँग बनाने के नियम:
• 'अ' तथा 'आ' को 'ई' करने से–
पुल्लिँग — स्त्रीलिँग
नर – नारी
बेटा – बेटी
बकरा – बकरी
लंबा – लंबी
गधा – गधी
नाला – नाली
गोप – गोपी
पुत्र – पुत्री
दास – दासी
ब्राह्मण – ब्राह्मणी
घोड़ा – घोड़ी
तरुण – तरुणी
नाना – नानी
पीला – पीली
मेँढक – मेँढकी
मुर्गा – मुर्गी
हरिण – हरिणी
लड़का – लड़की
• 'अ' तथा 'आ' को 'इया' करने से –
बंदर – बंदरिया
खाट – खटिया
लोटा – लुटिया
चूहा – चुहिया
बेटा – बिटिया
चिड़ा – चिड़िया
गुड्डा – गुड़िया
बच्छा – बछिया
डिब्बा – डिबिया
• संबंध, जाति तथा उपमानवाचक शब्दों में 'आनी' जोड़ने से –
मुगल – मुगलानी
पंडित – पंडितानी
क्षत्रिय – क्षत्राणी
नौकर – नौकरानी
सेठ – सेठानी
रुद्र – रुद्राणी
इंद्र – इंद्राणी
जेठ – जेठाणी
देवर – देवरानी
चौधरानी – चौधरानी
मेहतर – मेहतरानी
• व्यवसायवाचक, जातिवाचक तथा उपमानवाचक शब्दों में 'इन' या 'आइन' जोड़ने से –
पंडिताइन – पंडिताइन
ठाकुर – ठकुराइन
चौबे – चौबाइन
दर्जी – दर्जिन
हलवाई – हलवाइन
पाप – पापिन
चमार – चमारिन
कहार – कहारिन
जोगी – जोगिन
भंगी – भंगिन
साँप – साँपिन
लाला – ललाइन

बाबू – बबुआईन
जुलाहा – जुलाहिन
तेली – तेलिन
• प्राणिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओँ मेँ 'नी' जोड़कर–
मोर – मोरनी
सिँह – सिँहनी
भाट – भाटनी
भील – भीलनी
रीछ – रीछनी
ऊँट – ऊँटनी
शेर – शेरनी
हाथी – हथिनी
राजपूत – राजपूतनी
सियार – सियारनी
जाट – जाटनी
लम्बरदार – लम्बरदारनी
• तत्सम अकारांत शब्दोँ के अन्त में 'आ' जोड़कर–
कांत – कांता
चंचल – चंचला
तनय – तनया
आत्मज – आत्मजा
अनुज – अनुजा
प्रिय – प्रिया
पालित – पालिता
पूज्य – पूज्या
वृद्ध – वृद्धा
शिष्य – शिष्या
श्याम – श्यामा
कृष्ण – कृष्णा
सुत – सुता
शिव – शिवा
भवदीय – भवदीया
• तत्सम संज्ञा शब्दोँ मेँ 'अक' या 'इका' जोड़ने से–
अध्यापक – अध्यापिका
सेवक – सेविका
दर्शक – दर्शिका
संपादक – संपादिका
गायक – गायिका
नायक – नायिका
पाठक – पाठिका
सहायक – सहायिका
संयोजक – संयोजिका
लेखक – लेखिका
परिचायक – परिचायिका
संचालक – संचालिका
• तत्सम शब्दोँ मेँ 'ता' का 'त्री' करने से–
दाता – दात्री
अभिनेता – अभिनेत्री
विधाता – विधात्री
धाता – धात्री
नेता – नेत्री
निर्माता – निर्मत्री
वक्ता – वक्त्री
कर्त्ता – कर्त्री
• तत्सम शब्दोँ मेँ 'मान' और 'वान' का क्रमशः 'मती' और 'वती' करने से –
भगवान – भगवती
धनवान – धनवती
रूपवान – रूपवती
ज्ञानवान – ज्ञानवती
बुद्धिमान – बुद्धिमती
शक्तिमान – शक्तिमती
सत्यवान – सत्यमती
आयुष्मान – आयुष्मती
गुणवान – गुणवती
श्रीमान – श्रीमती
बलवान – बलवती
पुत्रवान – पुत्रवती
महान – महती
• 'इनी' प्रत्यय जोड़ने से ('अ' और 'ई' का 'इनी' या 'इणी' होना) –
मनोहारी – मनोहारिणी
एकाकी – एकाकिनी
यशस्वी – यशस्विनी
स्वामी – स्वामिनी
हाथी – हथिनी
हंस – हंसिनी

तपस्वी – तपस्विनी
अभिमान – अभिमानिनी
अधिकारी – अधिकारिणी
• पुल्लिँग तथा स्त्रीलिँग शब्दोँ मेँ क्रमशः मादा तथा नर जोड़ने से–
कोयल – मादा कोयल
मगरमच्छ – मादा मगरमच्छ
गैँडा – मादा गैँडा
नर चील – चील
भालू – मादा भालू
नर गिलहरी – गिलहरी
भेड़िया – मादा भेड़िया
खरगोश – मादा खरगोश
नर छिपकली – छिपकली
• हिँदी मेँ कुछ पुल्लिँग शब्द अपने स्त्रीलिँग से भिन्न होते हैँ–
पुरुष – स्त्री
राजा – रानी
बहन – भाई
साहब – मेम
बैल – गाय
वीर – वीरांगना
वर – वधू
पिता – माता
विद्वान – विदुषी
ससुर – सास
साली – साढू
पुत्र – पुत्रवधू
सम्राट – सम्राज्ञी
विधुर – विधवा
कवि – कवयित्री
बिलाव – बिल्ली
• कुछ सर्वनाम शब्दोँ का लिँग परिवर्तन इस प्रकार होता है–
उसका – उसकी
तुम्हारा – तुम्हारी
मेरा – मेरी
तेरा – तेरी
इनका – इनकी
हमारा – हमारी
• बहुत जगह पर एक ही वस्तु के वाचक एक ही भाषा के दो शब्द दो लिँगोँ मेँ प्रयुक्त होते हैँ–
वचन – वाणी
प्रेम – प्रीति
जगत् – जगती
गमन – गति
काठ – लकड़ी
दुःख – पीड़ा
चाम – खाल
आँख – चक्षु
वक्ष – छाती
पाषाण – शिला
दैव, भाग्य – नियति
• अनेक शब्दोँ का प्रयोग दोनोँ लिँगोँ मेँ समान रूप से होता है। जैसे–
सरकार, दही, नाक, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मंत्री, सचिव आदिं।
• संस्कृत मेँ 'आ' प्रत्यय युक्त शब्द स्त्रीलिँग होते हैँ–
भावना, प्रेरणा, वेदना, चेतना, सूचना, कल्पना, ताड़ना, धारणा, कामना आदि।
• हिँदी मेँ धातुओँ मेँ 'अ' प्रत्यय लगाने से बनी संज्ञाएँ प्रायः स्त्रीलिँग होती हैँ–
मारना – मार
खोजना – खोज
चहकना – चहक
बहकना – बहक
महकना – महक
कूकना – कूक
फूटना – फूट
खिसकना – खिसक
डपटना – डपट
(खेल, नाच, मेल, उतार, चढ़ाव आदि पुल्लिँग हैँ।)
• अरबी–फारसी के त, श, आ, ह के अंत वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैँ, जो हिँदी मेँ प्रचलित हैँ–
त – इज्जत, रिश्वत, ताकत, मेहनत आदि।
श – कोशिश, सिफारिश, मालिश, तलाश आदि।
आ – हवा, सजा, दवा, दुआ आदि।
ह – आह, राह, सलाह, सुबह, जगह, सुलह आदि।
• समान लिँग–युग्म–इन युग्मोँ मेँ मूल शब्द स्त्रीलिँग होता है, उसी मेँ पुरुषवाची प्रत्यय जोड़कर उसे पुल्लिँग बना लिया जाता है–
जीजी – जीजा
ननद – ननदोई
बहन – बहनोई
मौसी – मौसा
बकरी – बकरा।

वचन

संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध होता है उसे वचन कहते हैं। अर्थात् संज्ञा के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह एक के लिए प्रयुक्त हुआ है या एक से अधिक के लिए, वह वचन कहलाता है।
हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं–
1. एकवचन – संज्ञा के जिस रूप से एक ही वस्तु का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं। जैसे – बालक, बालिका, पेन, कुर्सी, लोटा, दूधवाला, अध्यापक, गाय, बकरी, स्त्री, नदी, कविता आदि।
2. बहुवचन – संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे – घोड़े, नदियाँ, रानियाँ, डिबियाँ, वस्तुएँ, गायें, बकरियाँ, लड़के, लड़कियाँ, स्त्रियाँ, बालिकाएँ, पैसे आदि।

◊ वचन की पहचान:
• वचन की पहचान संज्ञा अथवा सर्वनाम या विशेषण पद से ही हो सकती है। जैसे –
एकव. – बालिका खाना खा रही है।
बहुव. – बालिकाएँ खाना खा रही हैं।
एकव. – वह खेल रहा है।
बहुव. – वे खेल रहे हैं।
एकव. – मेरी सहेली सुन्दर है।
बहुव. – मेरी सहेलियाँ सुन्दर हैं।
• यदि वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण पद से न हो, तो क्रिया से हो जाती है। जैसे –
एकव. – ऊँट बैठा है।
बहुव. – ऊँट बैठे हैं।
एकव. – वह आज आ रहा है।
बहुव. – वे आज आ रहे हैं।

◊ वचन का विशिष्ट प्रयोग–
• आदरार्थक संज्ञा शब्दों के लिए सर्वनाम भी आदर के लिए बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे –
आज मुख्यमंत्री जी आये हैं।
मेरे पिताजी बाहर गए हैं।
कण्व ऋषि तो ब्रह्मचारी हैं।
• अधिकार अथवा अभिमान प्रकट करने के लिए भी आजकल 'मैं' की बजाय 'हम' का प्रयोग चल पड़ा है, जो व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है। जैसे –
शांत रहिए, अन्यथा हमें कड़ा रुख अपनाना पड़ेगा।
पिता के नाते हमारा भी कुछ कर्त्तव्य है।
• 'तुम' सर्वनाम के बहुवचन के रूप में 'तुम सब' का प्रचलन हो गया है। जैसे –
रमेश ! तुम यहाँ आओ।
अरे रमेश, सुरेश, दिनेश ! तुम सब यहाँ आओ।
• 'कोई' और 'कुछ' के बहुवचन 'किन्हीं' और 'कुछ' होते हैं। 'कोई' और 'किन्हीं' का प्रयोग सजीव प्राणियों के लिए होता है तथा 'कुछ' का प्रयोग निर्जीव प्राणियों के लिए होता है। कीड़े–मकोड़े आदि तुच्छ, अनाम प्राणियों के लिए भी 'कुछ' का प्रयोग होता है।
• 'क्या' का रूप सदा एक–सा रहता है। जैसे –
क्या लिखा रहे हो ?
क्या खाया था ?
क्या कह रही थीं वे सब ?
वह क्या बोली ?
• कुछ शब्द ऐसे हैं जो हमेशा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे– प्राण, होश, केश, रोम, बाल, लोग, हस्ताक्षर, दर्शन, आँसू, नेत्र, समाचार, दाम आदि।
प्राण – ऐसी हालत में मेरे प्राण निकल जाएँगे।
होश – उसके तो होश ही उड़ गए।
केश – तुम्हारे केश बहुत सुन्दर हैं।
लोग – सभी लोग जानते हैं कि मेरा कसूर नहीं है।
दर्शन – मैं हर साल सालासर वाले के दर्शन करने जाता हूँ।
हस्ताक्षर – अपने हस्ताक्षर यहाँ करो।
• भाववाचक संज्ञाएँ एवं धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे–
आजकल चाँदी भी सस्ती नहीं रही।
बचपन में मैं बहुत खेलता था।
रमा की बोली में बहुत मिठास है।
• कुछ शब्द एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे– जनता, दूध, वर्षा, पानी आदि।
जनता बड़ी भोली है।
हमें दो किलो दूध चाहिए।
बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है।
• कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके साथ समूह, दल, सेना, जाति इत्यादि प्रयुक्त होते हैं, उनका प्रयोग भी एकवचन में किया जाता है। जैसे– जन–समूह, मनुष्य–जाति, प्राणि–जगत, छात्र–दल आदि।
• जिन एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ जन, गण, वृंद, लोग इत्यादि शब्द जोड़े जाते हैं तो उन शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे –
आज मजदूर लोग काम पर नहीं आए।
अध्यापकगण वहाँ बैठे हैं।

♦ एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम:
• आकारान्त पुल्लिंग शब्दों का बहुवचन बनाने के लिए अंत में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाते हैं।
जैसे– रास्ता – रास्ते, पंखा – पंखे, इरादा – इरादे, वादा – वादे, गधा – गधे, संतरा – संतरे, बच्चा – बच्चे, बेटा – बेटे, लड़का – लड़के आदि।
अपवाद – कुछ संबंधवाचक, उपनाम वाचक और प्रतिष्ठावाचक पुल्लिँग शब्दों का रूप दोनों वचनों में एक ही रहता है। जैसे–
काका – काका
बाबा – बाबा
नाना – नाना
दादा – दादा
लाला – लाला
सूरमा – सूरमा।
• अकारान्त स्त्रीलिँग शब्दों का बहुवचन, अंत के स्वर 'अ' के स्थान पर 'एं' करने से बनता है। जैसे– आँख – आँखें
रात – रातें

झील – झीलें
पेन्सिल – पेन्सिलें
सड़क – सड़के
बात – बातें।
• इकारांत और ईकारांत संज्ञाओं में 'ई' को ह्रस्व करके अंत्य स्वर के पश्चात् 'याँ' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे–
टोपी – टोपियाँ
सखी – सखियाँ
लिपि – लिपियाँ
बकरी – बकरियाँ
गाड़ी – गाड़ियाँ
नीति – नीतियाँ
नदी – नदियाँ
निधि – निधियाँ
जाति – जातियाँ
लड़की – लड़कियाँ
रानी – रानियाँ
थाली – थालियाँ
शक्ति – शक्तियाँ
स्त्री – स्त्रियाँ।
• 'आ' अंत वाले स्त्रीलिँग शब्दों के अंत में 'आ' के साथ 'एँ' जोड़ने से भी बहुवचन बनाया जाता है। जैसे–
कविता – कविताएँ
माता – माताएँ
सभा – सभाएँ
गाथा – गाथाएँ
बाला – बालाएँ
सेना – सेनाएँ
लता – लताएँ
जटा – जटाएँ।
• कुछ आकारांत शब्दों के अंत में अनुनासिक लगाने से बहुवचन बनता है। जैसे–
बिटिया – बिटियाँ
खटिया – खटियाँ
डिबिया – डिबियाँ
चुहिया – चुहियाँ
बिन्दिया – बिन्दियाँ
कुतिया – कुतियाँ
चिड़िया – चिड़ियाँ
गुड़िया – गुड़ियाँ
बुढ़िया – बुढ़ियाँ।
• अकारांत और आकारांत पुल्लिँग व ईकारांत स्त्रीलिँग के अंत में 'ओं' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। जैसे–
बहन – बहनों
बरस – बरसों
राजा – राजाओं
साल – सालों
सदी – सदियों
घंटा – घंटों
देवता – देवताओं
दुकान – दुकानों
महीना – महीनों
विद्वान – विद्वानों
मित्र – मित्रों।
• संबोधन के लिए प्रयुक्त शब्दों के अंत में 'यों' अथवा 'ओं' लगाकर। जैसे–
सज्जन! – सज्जनों!
बाबू! – बाबूओं!
साधु! – साधुओं!
मुनि! – मुनियों!
सिपाही! – सिपाहियों!
मित्र! – मित्रों!
• विभक्ति रहित संज्ञाओं में 'अ', 'आ' के स्थान पर 'ओं' लगाकर। जैसे–
गरीब – गरीबों
खरबूजा – खरबूजों
लता – लताओं
अध्यापक – अध्यापकों।
• अनेक शब्दों के अंत में विशेष शब्द जोड़कर। जैसे–
पाठक – पाठकवर्ग
पक्षी – पक्षीवृंद
अध्यापक – अध्यापकगण
प्रजा – प्रजाजन
छात्र – छात्रवृंद
बालक – बालकगण
• कुछ शब्दों के रूप एकवचन तथा बहुवचन में समान पाए जाते हैं। जैसे–
छाया – छाया
याचना – याचना
कल – कल
घर – घर
क्रोध – क्रोध

पानी – पानी
क्षमा – क्षमा
जल – जल
दूध – दूध
प्रेम – प्रेम
वर्षा – वर्षा
जनता – जनता
• कुछ विशेष शब्दों के बहुवचन –
हाकिम – हुक्काम
खबर – खबरात
कायदा – कवाइद
काश्तकार – काश्तकारान
जौहर – जवाहिर
अमीर – उमरा
कागज – कागजात
मकान – मकानात
हक – हुकूक
ख्याल – ख्यालात
तारीख – तवारीख
तरफ – अतराफ।

वचन :-

किसी शब्द के जिस रूप में संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं -

1- एकवचन 2- बहुवचन

संस्कृत में वचन तीन प्रकार के होते हैं -

1- एकवचन 2- द्विवचन 3. बहुवचन

अंग्रेजी में हिन्दी की तरह ही वचन दो प्रकार के होते हैं -

1- Singular 2. Plural

* एकवचन - शब्द के जिस रूप में उसके एक (संख्या में) होने का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं जैसे - लड़का, पतंग, गाड़ी, पुस्तक पुरुष आदि।

* बहुवचन - शब्द के जिस रूप में एक से अधिक व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं, जैसे - लड़के, पतंगे, पुस्तकें, गाड़ियाँ, पुरुषों आदि।

गणनीय और अगणनीय संज्ञाएँ

वचन का एक भेद गणनीय और अगणनीय भी है। कुछ संज्ञाएँ गिनी जा सकती हैं, जैसे - मेजें, पुस्तकें, सेब, संतरे, मकान आदि। इन्हें गणनीय संज्ञाएँ कहते हैं। इनमें बहुवचन रूप एकवचन से भिन्न होते हैं। कुछ संज्ञाएँ गिनी नहीं जा सकतीं। उनका माप-तोल हो सकता है, जैसे - सोना, चाँदी, आटा, तेल घी आदि। इन्हें अगणनीय संज्ञाएँ कहते हैं। इनके एकवचन तथा बहुवचन रूप एक जैसे होते हैं।

एकवचन के कुछ नियम :-

1. विभक्ति एवं विभक्ति रहित शब्द एकवचन में आते हैं, जैसे - घोड़ा, लड़का, सविता आदि।

2. सम्माननीय लोगों के लिए प्रयुक्त बहुवचनीय क्रिया प्रयोग होते हुए भी सम्बोधन में "चाचा जी आज कलकत्ता जा रहे हैं।" में "चाचा जी" एकवचन शब्द है और इसके साथ "जा रहे हैं।" बहुवचन क्रिया-प्रयोग है।

3. "प्रत्येक", "हरएक" के साथ क्रिया का सदैव एकवचनीय प्रयोग होता है।

4. व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ एकवचनीय होती हैं जैसे - महेश, रमानिवास, गजाधर, सुनील आदि।

Scanned by CamScanner

5) भाववाचक संज्ञाएँ अधिकतर एकवचन में होती है, जैसे – एकता, महत्व, क्षमा, ममता आदि।

6) पदार्थ सम्बन्धी संज्ञाएँ एकवचनीय होती हैं – सोना, चाँदी, लोहा आदि।

7) मैं, मुझे, मेरे, तू, तुझे, तेरा, तेरे, जिस, जिसे, इसी, उसी, वह, उसे, उसका, यह, इसे, इसका, किसे, किसी, किस, किसकी, किस-किस, को, कौन-कौन, कब-कब आदि सर्वनाम एकवचन में व्यवहृत हैं।

8) 'अ' कारान्त विशेषण शब्द एकवचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे – लालफूल बालसुलभ आदि।

9) एक से अधिक कर्ता मिलकर आदि एक अर्थ देने लगें, तो उनके साथ एकवचन की क्रिया प्रयुक्त होती है –

→ मोहन ने दाल-रोटी खाई। → राम ने दाल-भात खाया।
→ कहीं रोटी-पानी घी मिला।

10) एक से अधिक भिन्न अर्थ होने पर अप्राणिवाचक शब्दों के साथ प्रयुक्त क्रिया एकवचन में होती है जैसे –

→ लता ने गीत और गजल गाया। → राम ने भजन और लोकगीत गाया।

बहुवचन के कुछ नियम

1) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के विकारी शब्द बहुवचनीय होते हैं, जैसे – लड़के, गाएँ, वे, हमें, अच्छे आदि।

2) जन, गण, वृन्द, वर्ग आदि से युक्त शब्द बहुवचनीय होते हैं – गुरुजन, छात्रगण, सज्जनवृन्द, महिलावर्ग आदि।

3) ओं, याँ, ये, यों से युक्त शब्द बहुवचन होते हैं; जैसे – बालकों, लड़कियाँ, गाएँ, लड़कियों आदि।

4) शब्दों की पुनरावृत्ति से भी बहुवचनीय रूप बनते हैं, जैसे – गाई-गाई, गाँव-गाँव, घर-घर आदि।

→ परन्तु ऐसे शब्द-युग्मों के साथ अनेक स्थानों पर एकवचनीय क्रिया-रूप प्रयुक्त होता है जैसे –

→ मैंने घर-भर दान माँगा। → मैंने गाँव-गाँव का दौरा किया।
→ मैंने भाई-भाई को लड़ते देखा।

5) व्यक्तिवाचक संज्ञा जब लक्षणा रूप में प्रयोग की जाती है तो बहुवचनीय रूप में प्रयुक्त होती है। जैसे –

→ आज के अंग्रेजी के कबीरदासों की महिमा महान है।
→ कालिदासों की हिन्दी में भी कमी नहीं है।
→ बुराइयाँ हमसे दूर नहीं होतीं।

Scanned by CamScanner

बहन, गाय, बात, सड़क, आदत, पुस्तक, किताब, कलम, बूँद, नाक, बोतल, बाँह, टाँग, पीठ, भैंस, मेड़ शाखा कथा लता कामना खबर वार्ता शिक्षिका अध्यापिका कक्षा सभा पाठशाला राह।

4→ इकारात में 'याँ' और ईकारान्त स्त्री संज्ञा में 'ई' को 'इ' करके 'याँ' जोड़कर —
जैसे → तिथि : तिथियाँ लड़की : लड़कियाँ आदि।
[इनके रूप आप स्वयं लिखे]

रीति, नारी, नीति, जाड़ी, साड़ी, धोती, नाली, अँगुली, खिड़की, कुर्सी, दरी, छड़ी, घड़ी, ककड़ी, गाड़ी, सवारी, बच्ची, नदी।

5→ उकारान्त स्त्री संज्ञा में 'एँ' एवं ऊकारान्त में 'ऊ' को 'उ' कर 'एँ' लगाकर
जैसे — चिड़िया - चिड़ियाँ [इनके आप स्वयं लिखे]
डिबिया, चिड़िया, गुड़िया, बुढ़िया, माचिया, बछिया।

जैसे - वस्तु : वस्तुएँ
बहू : बहुएँ
वधू : वधुएँ

6→ उपर्युक्त 4 उदाहरण में 'या' अन्तवाली स्त्री संज्ञाओं में 'या' के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगाकर — ।

7→ गण, वृन्द, लोग, सब, जन आदि लगाकर भी कुछ संज्ञाएँ बहुवचन बनाई जाती हैं।
जैसे → बालक - बालकगण अध्यापक - अध्यापकवृन्द गुरु = गुरुजन
ब्राह्मण - ब्राह्मणलोग शिक्षक - शिक्षकगण भाई - भाईलोग
नारी - नारीवृन्द बंधु - बंधुवर्ग नेता - नेतालोग

8→ इनमें ओं / यों लगाकर कोष्ठक में किसी कारक के चिन्ह लिखें —
जैसे → लड़का : लड़कों (ने) लड़की : लड़कियों (में) बच्चा : बच्चाओं (में)

⇒ कुछ विषयगत बातें → साधारणत: एक संख्या के लिए एकवचन का और अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है, लेकिन —

1. आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है,
जैसे → ⇒ महात्मा बुद्ध महान थे। ⇒ मेरे पिता व्यापारी हैं।
⇒ राजा - राम प्रजा को बहुत चाहते थे। ⇒ माताजी पहुँच गई होंगी।

2. अपना अधिकार, अभिमान या बड़प्पन जताने के लिए भी 'मैं' के स्थान पर कभी-कभी लोग 'हम' बहुवचन का प्रयोग करते हैं।
मालिक नौकर से प्राय: ऐसे ही बात करता है। जैसे →
⇒ हम जा रहे हैं? ⇒ हमारे लिए खाना लाओ।
⇒ अकबर ने कहा - हमें शांति चाहिए।

Scanned by CamScanner

⇒ अच्छाइयाँ हमारे लिए अनुकरणीय हैं।

⇒ एक से अधिक कर्ता हो तो क्रिया बहुवचन में होती है — रानी और रमेश आ गये।

स्पष्टीकरण → परन्तु यही दोनों कर्मवाच्य में अन्य स्थिति में माने जायेंगे — 'रानी और रमेश ने यह कार्य पूरा किया।'

8→ प्राणिवाचक शब्दों के एकाधिक कर्म होने की स्थिति में मान जायेंगे — 'रानी और है, जैसे — अमरूद और सेब खरीदे।

9→ हम, हमें, हमारा, हमारे, तुम, तुम्हें, तुम्हारा, तुम्हारे, जिन, जिन्हें, इन्हीं, उन्हीं, वे, उन्हें, उनका, मैं, इनका, किन्हें, किन्हीं, किन आदि रूप सदैव बहुवचन में प्रयोग किये जाते हैं।

10→ सभी ; सब शब्द संज्ञा से पूर्व लगाने पर संज्ञा को बहुवचनीय बना देते हैं जैसे.
⇒ सभी छात्र अनुशासित बैठे रहे। ⇒ सब लोग गुरुजी की बातों को ध्यान से सुन रहे थे।

★ एकवचन से बहुवचन बनाने की दो विधियाँ हैं :-

1→ निर्विभक्तिक रूप → जब बिना कारक - चिन्ह लगाए विभिन्न प्रत्ययों के योग से बहुवचन रूप बनाएँ जाएँ। जैसे —
⇒ लड़का + ए = लड़के ⇒ लड़की + याँ = लड़कियाँ ⇒ रात + एँ = रातें आदि।

2→ सविभक्तिक रूप → जब कारक चिन्ह के कारण ओं / यों प्रत्यय लगाकर बहुवचन रूप बनाया जाये। जैसे —
⇒ लड़का + ओं = लड़कों ⇒ लड़की + यों = लड़कियों ⇒ हाथी + यों = हाथियों आदि।

Note सविभक्तिक रूप बनाने के लिए स्त्री. पुं. सभी संज्ञाओं में ओं / यों प्रत्यय लगाया जाता है। इस रूप के साथ किसी न किसी कारक का चिन्ह अवश्य आता है। संज्ञा का यह रूप सिर्फ वाक्यों में देखा जाता है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम →

1→ आकारान्त पुं. संज्ञा में 'आ' की जगह 'ए' की मात्रा लगाकर —
जैसे → लड़का : लड़के कुत्ता : कुत्ते

[इसी तरह निम्न संज्ञाओं के बहुवचन रूप बनाएँ]

घोड़ा, गधा, पंखा, पहिया, कपड़ा, छाता, रास्ता, बच्चा, तारा, कमरा, आईना, थैला, बकरा, बछड़ा।

2→ अन्य पुं. संज्ञाओं के दोनों वचनों में समान रूप होते हैं।
जैसे → फूल : फूल हाथी : हाथी आदि।

3→ अकारान्त या आकारान्त स्त्री. संज्ञाओं में 'एँ' जोड़कर —
जैसे → रात : रातें माता : माताएँ

(इनके रूप आप स्वयं लिखें):

Scanned by CamScanner

3:- कुछ संज्ञा शब्द सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे – लोग, दर्शन, प्रजा, रोम, प्राण, बाल, होश, आँसू, ~~हस्ता~~ हस्ताक्षर आदि।

⇒ कृपया अपने आँसू पोंछ डालिए।

⇒ भय से उसके तो प्राण ही निकल गए।

⇒ पुलिस को देखकर जगमोहन के होश उड़ गए।

⇒ मेरे बाल झड़ते हैं।

⇒ आजकल लोग सीधे मुँह बात तक नहीं करते।

⇒ आज बेटे के दर्शन हुए।

4:- आजकल एकवचन सर्वनाम का 'तू' शब्द अपमानार्थ या अत्यंत छोटे अथवा अत्यंत प्रिय के लिए ही प्रयोग किया जाता है। सम्मान प्रगट करने के लिए 'तू' के स्थान पर 'तुम' सम्बोधन किया जाता है। तुम (उदाहरण लिखे) जैसे –

⇒ तू खुद को क्या समझता है? ⇒ शुचि! तू पागल है।

⇒ ललिता, तुम धन्य हो। ⇒ तू अगर चाहे, तो निधि से पूछ ले।

5⇒ जनता, वर्षा, पानी, दूध, आग, पुलिस, भीड़ आदि शब्द सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे –

⇒ जनता ने आन्दोलन छेड़ दिया है। ⇒ मुझे ठंडा पानी चाहिए।

⇒ कल बहुत वर्षा हुई थी। ⇒ उसे गर्म दूध दो।

⇒ मकान को आग ने घेर लिया ⇒ पुलिस आ गई तो भीड़ रुक गई।

6:- कुछ एकवचन शब्द गण, लोग, जन, वृन्द आदि समूहवाचक शब्दों के साथ जुड़कर बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे –

⇒ अध्यापकगण यहाँ बैठें।

⇒ मजदूर लोग अपने काम पर जाएँ।

⇒ छात्रवृन्द आजकल ग्रीष्मावकाश का आनन्द ले रहे हैं।

⇒ प्रजाजन अनुशासन का महत्व समझें।

Scanned by CamScanner

① — सामान्य अशुद्धियाँ —

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सप्ताहिक	साप्ताहिक	परिक्षा	परीक्षा
शुरु	शुरू	कवियत्री	कवयित्री
बुढ़ापा	बुढ़ापा	आशीर्लाद	आशीर्वाद
उज्जवल	उज्ज्वल	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
श्राप	शाप	अतिथी	अतिथि
उलंघन	उल्लंघन	दिपावली	दीपावली
पुज्यनीय	पूजनीय	बिमारी	बीमारी
लाधिनी	लधिनी	हानिष्ट	हानिष्ठ
श्रृंगार	शृंगार	प्रसंशा	प्रशंसा
अमाबश्या	अमावस्या	आदेश	आपशे
सन्यासी	संन्यासी	उपलक्षा	उपलक्ष्य
निर्दयी	निर्दय	पती-पाती	पति-पत्नी
अध्यन	अध्ययन	पुन्य	पुण्य
गुरु	गुरु	हिंदु	हिंदू
कुतिया	कुतिया	धुँआ	धुआँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
मात्रभूमि -	मातृभूमि	नमश्कार	नमस्कार
कार्यकर्म -	कार्यक्रम	उपरोक्त	उपर्युक्त
स्वास्थय -	स्वास्थ्य	कृप्या	कृपया
प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित	स्वालंबन	स्वावलंबन
अत: एव	अतएव	व्यंग	व्यंग्य
रामायन	रामायण	सन्मुख	सम्मुख
राधेशाम	राधेश्याम	शब्द कोष	शब्दकोश
सहस्त्र	सहस्र	स्थाई	स्थायी
हंसमुख	हँसमुख	औद्यौगिक	औद्योगिक

सामान्य हिन्दी

7. वर्तनी एवं वाक्य शुद्धीकरण

किसी शब्द को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं। अँग्रेजी में वर्तनी को 'Spelling' तथा उर्दू में 'हिज्जे' कहते हैं। किसी भाषा की समस्त ध्वनियों को सही ढंग से उच्चारित करने हेतु वर्तनी की एकरुपता स्थापित की जाती है। जिस भाषा की वर्तनी में अपनी भाषा के साथ अन्य भाषाओं की ध्वनियों को ग्रहण करने की जितनी अधिक शक्ति होगी, उस भाषा की वर्तनी उतनी ही समर्थ होगी। अतः वर्तनी का सीधा सम्बन्ध भाषागत ध्वनियों के उच्चारण से है।

शुद्ध वर्तनी लिखने के प्रमुख नियम निम्न प्रकार हैं–

• हिन्दी में विभक्ति चिह्न सर्वनामों के अलावा शेष सभी शब्दों से अलग लिखे जाते हैं, जैसे–
- मोहन ने पुत्र को कहा।
- श्याम को रुपये दे दो।

परन्तु सर्वनाम के साथ विभक्ति चिह्न हो तो उसे सर्वनाम में मिलाकर लिखा जाना चाहिए, जैसे– हमने, उसने, मुझसे, आपको, उसको, तुमसे, हमको, किससे, किसको, किसने, किसलिए आदि।

• सर्वनाम के साथ दो विभक्ति चिह्न होने पर पहला विभक्ति चिह्न सर्वनाम में मिलाकर लिखा जाएगा एवं दूसरा अलग लिखा जाएगा, जैसे–
आपके लिए, उसके लिए, इनमें से, आपमें से, हममें से आदि।
सर्वनाम और उसकी विभक्ति के बीच 'ही' अथवा 'तक' आदि अव्यय हों तो विभक्ति सर्वनाम से अलग लिखी जायेगी, जैसे–
आप ही के लिए, आप तक को, मुझ तक को, उस ही के लिए।

• संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाओं को अलग–अलग लिखा जाना चाहिए, जैसे– जाया करता है, पढ़ा करता है, जा सकते हो, खा सकते हो, आदि।

• पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' को क्रिया से मिलाकर लिखा जाता है, जैसे– सोकर, उठकर, गाकर, धोकर, मिलाकर, अपनाकर, खाकर, पीकर, आदि।

• द्वन्द्व समास में पदों के बीच योजन चिह्न (–) हाइफन लगाया जाना चाहिए, जैसे– माता–पिता, राधा–कृष्ण, शिव–पार्वती, बाप–बेटा, रात–दिन आदि।

• 'तक', 'साथ' आदि अव्ययों को पृथक लिखा जाना चाहिए, जैसे– मेरे साथ, हमारे साथ, यहाँ तक, अब तक आदि।

• 'जैसा' तथा 'सा' आदि सारूप्य वाचकों के पहले योजक चिह्न (–) का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे– चाकू–सा, तीखा–सा, आप–सा, प्यारा–सा, कन्हैया–सा आदि।

• जब वर्णमाला के किसी वर्ग के पंचम अक्षर के बाद उसी वर्ग के प्रथम चारों वर्णों में से कोई वर्ण हो तो पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होना चाहिए। जैसे– कंकर, गंगा, चंचल, ठंड, नंदन, संपन्न, अंत, संपादक आदि। परंतु जब नासिक्य व्यंजन (वर्ग का पंचम वर्ण) उसी वर्ग के प्रथम चार वर्णों के अलावा अन्य किसी वर्ण के पहले आता है तो उसके साथ उस पंचम वर्ण का आधा रूप ही लिखा जाना चाहिए। जैसे– पन्ना, सम्राट, पुण्य, अन्य, सन्मार्ग, रम्य, जन्म, अन्वय, अन्वेषण, गन्ना, निम्न, सम्मान आदि परन्तु घन्टा, ठन्डा, हिण्दी आदि लिखना अशुद्ध है।

• अ, ऊ एवं आ मात्रा वाले वर्णों के साथ अनुनासिक चिह्न (ँ) को इसी चन्द्रबिन्दु (ँ) के रूप में लिखा जाना चाहिए, जैसे– आँख, हँस, जाँच, काँच, अँगना, साँस, ढाँचा, ताँत, दायाँ, बायाँ, ऊँट, हूँ, जूँ आदि। परन्तु अन्य मात्राओं के साथ अनुनासिक चिह्न को अनुस्वार (ं) के रूप में लिखा जाता है, जैसे– मैंने, नहीं, ढेंचा, खींचना, दायें, बायें, सिँचाई, ईंट आदि।

• संस्कृत मूल के तत्सम शब्दों की वर्तनी में संस्कृत वाला रूप ही रखा जाना चाहिए, परन्तु कुछ शब्दों के नीचे हलन्त (्) लगाने का प्रचलन हिन्दी में समाप्त हो चुका है। अतः उनके नीचे हलन्त न लगाया जाये, जैसे– महान, जगत, विद्वान आदि। परन्तु संधि या छन्द को समझाने हेतु नीचे हलन्त लगाया जाएगा।

• अँग्रेजी से हिन्दी में आये जिन शब्दों में आधे 'ओ' (आ एवं ओ के बीच की ध्वनि 'ऑ') की ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके ऊपर अर्द्ध चन्द्रबिन्दु लगानी चाहिए, जैसे– बॉल, कॉलेज, डॉक्टर, कॉफी, हॉल, हॉस्पिटल आदि।

• संस्कृत भाषा के ऐसे शब्दों, जिनके आगे विसर्ग (:) लगता है, यदि हिन्दी में वे तत्सम रूप में प्रयुक्त किये जाएँ तो उनमें विसर्ग लगाना चाहिए, जैसे– दुःख, स्वान्तः, फलतः, प्रातः, अतः, मूलतः, प्रायः आदि। परन्तु दुखद, अतएव आदि में विसर्ग का लोप हो गया है।

• विसर्ग के पश्चात् श, ष, या स आये तो या तो विसर्ग को यथावत लिखा जाता है या उसके स्थान पर अगला वर्ण अपना रूप ग्रहण कर लेता है। जैसे–
- दुः + शासन = दुःशासन या दुश्शासन
- निः + सन्देह = निःसन्देह या निस्सन्देह ।

• वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ एवं उनमें सुधार :

उच्चारण दोष अथवा शब्द रचना और संधि के नियमों की जानकारी की अपर्याप्तता के कारण सामान्यतः वर्तनी अशुद्धि हो जाती है।
वर्तनी की अशुद्धियों के प्रमुख कारण निम्न हैं–

• उच्चारण दोष: कई क्षेत्रों व भाषाओं में, स–श, व–ब, न–ण आदि वर्णों में अर्थभेद नहीं किया जाता तथा इनके स्थान पर एक ही वर्ण स, ब या न बोला जाता है जबकि हिन्दी में इन वर्णों की अलग–अलग अर्थ–भेदक ध्वनियाँ हैं। अतः उच्चारण दोष के कारण इनके लेखन में अशुद्धि हो जाती है। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध
कोसिस	कोशिश
सीदा	सीधा
सबी	सभी
सोर	शोर
अराम	आराम
पाणी	पानी
बबाल	बवाल
पाठसाला	पाठशाला
शब	शव
निपुन	निपुण

प्रान – प्राण
बचन – वचन
ब्यवहार – व्यवहार
रामायन – रामायण
गुन – गुण

• जहाँ 'श' एवं 'स' एक साथ प्रयुक्त होते हैँ वहाँ 'श' पहले आयेगा एवं 'स' उसके बाद। जैसे– शासन, प्रशंसा, नृशंस, शासक ।
इसी प्रकार 'श' एवं 'ष' एक साथ आने पर पहले 'श' आयेगा फिर 'ष', जैसे– शोषण, शीर्षक, विशेष, शेष, वेशभूषा, विशेषण आदि।

• 'स्' के स्थान पर पूरा 'स' लिखने पर या 'स' के पहले किसी अक्षर का मेल करने पर अशुद्धि हो जाती है, जैसे– इस्त्री (शुद्ध होगा– स्त्री), अस्नान (शुद्ध होगा– स्नान), परसपर अशुद्ध है जबकि शुद्ध है परस्पर।

• अक्षर रचना की जानकारी का अभाव : देवनागरी लिपि मेँ संयुक्त व्यंजनोँ मेँ दो व्यंजन मिलाकर लिखे जाते हैँ, परन्तु इनके लिखने मेँ त्रुटि हो जाती है, जैसे–
अशुद्ध शुद्ध
आर्शीवाद – आशीर्वाद
निमार्ण – निर्माण
पुर्नस्थापना – पुनर्स्थापना
बहुधा 'र्' के प्रयोग मेँ अशुद्धि होती है। जब 'र्' (रेफ़) किसी अक्षर के ऊपर लगा हो तो वह उस अक्षर से पहले पढ़ा जाएगा। यदि हम सही उच्चारण करेँगे तो अशुद्धि का ज्ञान हो जाता है। आशीर्वाद मेँ 'र्' , 'वा' से पहले बोला जायेगा– आशीर् वाद। इसी प्रकार निर्माण मेँ 'र्' का उच्चारण 'मा' से पहले होता है, अतः 'र्' मा के ऊपर आयेगा।

• जिन शब्दोँ मेँ व्यंजन के साथ स्वर, 'र्' एवं आनुनासिक का मेल हो उनमेँ उस अक्षर को लिखने की विधि है–
अक्षर स्वर र् अनुस्वार (ं)।
जैसे– त् ए र् अनुस्वार=शर्तेँ
म् ओ र् अनुस्वार=कर्मोँ।
इसी प्रकार औरोँ, धर्मोँ, पराक्रमोँ आदि को लिखा जाता है।

• कोई, भाई, मिठाई, कई, ताई आदि शब्दोँ को कोयी, भायी, मिठायी, तायी आदि लिखना अशुद्ध है। इसी प्रकार अनुयायी, स्थायी, वाजपेयी शब्दोँ को अनयाई, स्थाई, वाजपेई आदि रूप मेँ लिखना भी अशुद्ध होता है।

• सम् उपसर्ग के बाद य, र, ल, व, श, स, ह आदि ध्वनि हो तो 'म्' को हमेशा अनुस्वार (ं) के रूप मेँ लिखते हैँ, जैसे– संयम, संवाद, संलग्न, संसर्ग, संहार, संरचना, संरक्षण आदि। इन्हेँ सम्शय, सम्हार, सम्वाद, सम्रचना, सम्लग्न, सम्रक्षण आदि रूप मेँ लिखना सदैव अशुद्ध होता है।

• आनुनासिक शब्दोँ मेँ यदि 'अ' या 'आ' या 'ऊ' की मात्रा वाले वर्णोँ मेँ आनुनासिक ध्वनि (ँ) आती है तो उसे हमेशा (ँ) के रूप मेँ ही लिखा जाना चाहिए। जैसे– दाँत, पूँछ, ऊँट, हूँ, पाँच, हाँ, चाँद, हँसी, ढाँचा आदि परन्तु जब वर्ण के साथ अन्य मात्रा हो तो (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है, जैसे– फँक, नहीँ, खीँचना, गोँद आदि।

• विराम चिह्नोँ का प्रयोग न होने पर भी अशुद्धि हो जाती है और अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे–
- रोको, मत जाने दो।
- रोको मत, जाने दो।
इन दोनोँ वाक्योँ मेँ अल्प विराम के स्थान परिवर्तन से अर्थ बिल्कुल उल्टा हो गया है।

• 'ष' वर्ण केवल षट् (छह) से बने कुछ शब्दोँ, यथा– षट्कोण, षड़यंत्र आदि के प्रारंभ मेँ ही आता है। अन्य शब्दोँ के शुरू मेँ 'श' लिखा जाता है। जैसे– शोषण, शासन, शेषनाग आदि।

• संयुक्ताक्षरोँ मेँ 'ट्' वर्ग से पूर्व मेँ हमेशा 'ष्' का प्रयोग किया जाता है, चाहे मूल शब्द 'श' से बना हो, जैसे– सृष्टि, षष्ट, नष्ट, कष्ट, अष्ट, ओष्ठ, कृष्ण, विष्णु आदि।

• 'क्श' का प्रयोग सामान्यतः नक्शा, रिक्शा, नक्श आदि शब्दोँ मेँ ही किया जाता है, शेष सभी शब्दोँ मेँ 'क्ष' का प्रयोग किया जाता है। जैसे– रक्षा, कक्षा, क्षमता, सक्षम, शिक्षा, दक्ष आदि।

• 'ज्ञ' ध्वनि के उच्चारण हेतु 'ग्य' लिखित रूप मेँ निम्न शब्दोँ मेँ ही प्रयुक्त होता है – ग्यारह, योग्य, अयोग्य, भाग्य, रोग से बने शब्द जैसे–आरोग्य आदि मेँ। इनके अलावा अन्य शब्दोँ मेँ 'ज्ञ' का प्रयोग करना सही होता है, जैसे– ज्ञान, अज्ञात, यज्ञ, विशेषज्ञ, विज्ञान, वैज्ञानिक आदि।

• हिन्दी भाषा सीखने के चार मुख्य सोपान हैँ – सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है जिसकी प्रधान विशेषता है कि जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। अतः शब्द को लिखने से पहले उसकी स्वर–ध्वनि को समझकर लिखना समीचीन होगा। यदि 'ए' की ध्वनि आ रही है तो उसकी मात्रा का प्रयोग करेँ। यदि 'उ' की ध्वनि आ रही है तो 'उ' की मात्रा का प्रयोग करेँ।

हिन्दी में अशुद्धियों के विविध प्रकार

शब्द–संरचना तथा वाक्य प्रयोग मेँ वर्तनीगत अशुद्धियोँ के कारण भाषा दोषपूर्ण हो जाती है। प्रमुख अशुद्धियाँ निम्नलिखित हैँ–

1. भाषा (अक्षर या मात्रा) सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

अशुद्ध — शुद्ध
बृटिश – ब्रिटिश
त्रगुण – त्रिगुण
रिषी – ऋषि
बृह्मा – ब्रह्मा
बन्ध – बँध
पैत्रिक – पैतृक
जाग्रती – जागृति
स्त्रीयाँ – स्त्रियाँ
स्रष्टि – सृष्टि
अती – अति
तैय्यार – तैयार
आवश्यकीय – आवश्यक
उपरोक्त – उपर्युक्त
श्रोत – स्रोत
जाइये – जाइए
लाइये – लाइए

लिये – लिए
अनुगृह – अनुग्रह
अकाश – आकाश
असीस – आशिष
देहिक – दैहिक
कवियत्रि – कवयित्री
द्रष्टि – दृष्टि
घनिष्ट – घनिष्ठ
व्यवहारिक – व्यावहारिक
रात्री – रात्रि
प्राप्ती – प्राप्ति
सामर्थ – सामर्थ्य
एकत्रित – एकत्र
ईर्षा – ईर्ष्या
पुन्य – पुण्य
कृतघ्नी – कृतघ्न
बनिता – वनिता
निरिक्षण – निरीक्षण
पती – पति
आक्रष्ट – आकृष्ट
सामिल – शामिल
मष्तिस्क – मस्तिष्क
निसार – निःसार
सन्मान – सम्मान
हिन्दु – हिन्दू
गुरू – गुरु
दान्त – दाँत
चहिए – चाहिए
प्रथक – पृथक्
परिक्षा – परीक्षा
षोडषी – षोडशी
परीवार – परिवार
परीचय – परिचय
सौन्दर्यता – सौन्दर्य
अज्ञानता – अज्ञान
गरीमा – गरिमा
समाधी – समाधि
बूड़ा – बूढ़ा
ऐक्यता – एक्य,एकता
पूज्यनीय – पूजनीय
पत्नि – पत्नी
अतीशय – अतिशय
संसारिक – सांसारिक
शताब्दि – शताब्दी
निरोग – नीरोग
दुकान – दूकान
दम्पति – दम्पती
अन्तर्चेतना – अन्तश्चेतना

2. लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ :

हिन्दी में लिँग सम्बन्धी अशुद्धियाँ प्रायः दिखाई देती हैँ। इस दृष्टि से निम्न बातोँ का ध्यान रखना चाहिए—

(1) विशेषण शब्दोँ का लिँग सदैव विशेष्य के समान होता है।
(2) दिनोँ, महीनोँ, ग्रहोँ, पहाड़ोँ, आदि के नाम पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैँ, किन्तु तिथियोँ, भाषाओँ और नदियोँ के नाम स्त्रीलिँग में प्रयोग किये जाते हैँ।
(3) प्राणिवाचक शब्दोँ का लिँग अर्थ के अनुसार तथा अप्राणिवाचक शब्दोँ का लिँग व्यवहार के अनुसार होता है।
(4) अनेक तत्सम शब्द हिन्दी में स्त्रीलिँग में प्रयुक्त होते हैँ।

- उदाहरण—
• दही बड़ी अच्छी है। (बड़ा अच्छा)
• आपने बड़ी अनुग्रह की। (बड़ा, किया)
• मेरा कमीज उतार लाओ। (मेरी)
• लड़के और लड़कियाँ चिल्ला रहे हैँ। (रही)
• कटोरे में दही जम गई। (गया)
• मेरा ससुराल जयपुर में है। (मेरी)
• महादेवी विदुषी कवि हैँ। (कवयित्री)
• आत्मा अमर होता है। (होती)
• उसने एक हाथी जाती हुई देखी। (जाता हुआ देखा)
• मन की मैल काटती है। (का, काटता)
• हाथी का सूंड केले के समान होता है। (की, होती)
• सीताजी वन को गए। (गयीँ)
• विद्वान स्त्री (विदुषी स्त्री)
• गुणवान महिला (गुणवती महिला)
• माघ की महीना (माघ का महीना)
• मूर्तिमान् करुणा (मूर्तिमयी करुणा)
• आग का लपट (आग की लपट)
• मेरा शपथ (मेरी शपथ)
• गंगा का धारा (गंगा की धारा)

• चन्द्रमा की मण्डल (चन्द्रमा का मण्डल)।

3.समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
दो या दो से अधिक पदों का समास करने पर प्रत्ययों का उचित प्रयोग न करने से जो शब्द बनता है, उसमें कभी–कभी अशुद्धि रह जाती है। जैसे –
अशुद्ध — शुद्ध
दिवारात्रि – दिवारात्र
निरपराधी – निरपराध
ऋषीजन – ऋषिजन
प्रणीमात्र – प्राणिमात्र
स्वामीभक्त – स्वामिभक्त
पिताभक्ति – पितृभक्ति
महाराजा – महाराज
भ्राताजन – भ्रातृजन
दुरावस्था – दुरवस्था
स्वामीहित – स्वामिहित
नवरात्रा – नवरात्र

4.संधि सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अशुद्ध — शुद्ध
उपरोक्त – उपर्युक्त
सदोपदेश – सदुपदेश
वयवृद्ध – वयोवृद्ध
सदेव – सदैव
अत्याधिक – अत्यधिक
सन्मुख – सम्मुख
उधृत – उद्धृत
मनहर – मनोहर
अधतल – अधस्तल
आर्शीवाद – आशीर्वाद
दुरावस्था – दुरवस्था

5. विशेष्य–विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अशुद्ध — शुद्ध
पूज्यनीय व्यक्ति – पूजनीय व्यक्ति
लाचारवश – लाचारीवश
महान् कृपा – महती कृपा
गोपन कथा – गोपनीय कथा
विद्वान् नारी – विदुषी नारी
मान्यनीय मन्त्रीजी – माननीय मन्त्रीजी
सन्तोष-चित्त – सन्तुष्ट-चित्त
सुखमय शान्ति – सुखमयी शान्ति
सुन्दर वनिताएँ – सुन्दरी वनिताएँ
महान् कार्य – महत्कार्य

6. प्रत्यय–उपसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अशुद्ध — शुद्ध
सौन्दर्यता – सौन्दर्य
लाघवता – लाघव
गौरवता – गौरव
चातुर्यता – चातुर्य
ऐक्यता – ऐक्य
सामर्थ्यता – सामर्थ्य
सौजन्यता – सौजन्य
औदार्यता – औदार्य
मनुष्यत्वता – मनुष्यत्व
अभिष्ट – अभीष्ट
बेफिजूल – फिजूल
मिठासता – मिठास
अज्ञानता – अज्ञान
भूगौलिक – भौगोलिक
इतिहासिक – ऐतिहासिक
निरस – नीरस

7. वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
(1) हिन्दी में बहुत–से शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है, ऐसे शब्द हैं—हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, आँसू, होश आदि।
(2) वाक्य में 'या' , 'अथवा' का प्रयोग करने पर क्रिया एकवचन होती है। लेकिन 'और' , 'एवं' , 'तथा' का प्रयोग करने पर क्रिया बहुवचन होती है।
(3) आदरसूचक शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।
उदाहरणार्थ—
1. दो चादर खरीद लाया। (चादरें)
2. एक चटाइयाँ बिछा दो। (चटाई)
3. मेरा प्राण संकट में है। (मेरे, हैं)
4. आज मैंने महात्मा का दर्शन किया। (के, किये)
5. आज मेरा मामा आये। (मेरे)
6. फूल की माला गूँथो। (फूलों)
7. यह हस्ताक्षर किसका है? (ये, किसके, हैं)
8. विनोद, रमेश और रहीम पढ़ रहा है। (रहे हैं)

अन्य उदाहरण—
अशुद्ध — शुद्ध
स्त्रीयाँ – स्त्रियाँ
मातायों – माताओं
नारिओं – नारियों
अनेकों – अनेक
बहुतों – बहुत
मुनिओं – मुनियों
सबों – सब
विद्यार्थीयों – विद्यार्थियों
बन्धुएँ – बन्धुओं
दादों – दादाओं
सभीओं – सभी
नदीओं – नदियों

8. कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अ. – राम घर नहीं है।
शु. – राम घर पर नहीं है।
अ. – अपने घर साफ रखो।
शु. – अपने घर को साफ रखो।
अ. – उसको काम को करने दो।
शु. – उसे काम करने दो।
अ. – आठ बजने को पन्द्रह मिनट हैं।
शु. – आठ बजने में पन्द्रह मिनट हैं।
अ. – मुझे अपने काम को करना है।
शु. – मुझे अपना काम करना है।
अ. – यहाँ बहुत से लोग रहते हैं।
शु. – यहाँ बहुत लोग रहते हैं।

9.शब्द–क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ :
अ. – वह पुस्तक है पढ़ता।
शु. – वह पुस्तक पढ़ता है।
अ. – आजाद हुआ था यह देश सन् 1947 में।
शु. – यह देश सन् 1947 में आजाद हुआ था।
अ. – 'पृथ्वीराज रासो' रचना चन्द्रवरदाई की है।
शु. – चन्द्रवरदाई की रचना 'पृथ्वीराज रासो' है।

• वाक्य–रचना सम्बन्धी अशुद्धियाँ एवं सुधार:
(1) वाक्य–रचना में कभी विशेषण का विशेष्य के अनुसार उचित लिंग एवं वचन में प्रयोग न करने से या गलत कारक–चिह्न का प्रयोग करने से अशुद्धि रह जाती है।
(2) उचित विराम–चिह्न का प्रयोग न करने से अथवा शब्दों को उचित क्रम में न रखने पर भी अशुद्धियाँ रह जाती हैं।
(3) अनर्थक शब्दों का अथवा एक अर्थ के लिए दो शब्दों का और व्यर्थ के अव्यय शब्दों का प्रयोग करने से भी अशुद्धि रह जाती है।
उदाहरणार्थ—
(अ.→अशुद्ध, शु.→शुद्ध)
अ. – सीता राम की स्त्री थी।
शु. – सीता राम की पत्नी थी।
अ. – मंत्रीजी को एक फूलों की माला पहनाई।
शु. – मंत्रीजी को फूलों की एक माला पहनाई।
अ. – महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवि थीं।
शु. – महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवयित्री थीं।
अ. – शत्रु मैदान से दौड़ खड़ा हुआ था।
शु. – शत्र मैदान से भाग खड़ा हुआ।
अ. – मेरे भाई को मैंने रुपये दिए।
शु. – अपने भाई को मैंने रुपये दिये।
अ. – यह किताब बड़ी छोटी है।
शु. – यह किताब बहुत छोटी है।
अ. – उपरोक्त बात पर मनन कीजिए।
शु. – उपर्युक्त बात पर मनन करिये।
अ. – सभी छात्रों में रमेश चतुरतर है।
शु. – सभी छात्रों में रमेश चतुरतम है।
अ. – मेरा सिर चक्कर काटता है।
शु. – मेरा सिर चकरा रहा है।
अ. – शायद आज सुरेश जरूर आयेगा।
शु. – शायद आज सुरेश आयेगा।
अ. – कृपया हमारे घर पधारने की कृपा करें।
शु. – हमारे घर पधारने की कृपा करें।
अ. – उसके पास अमूल्य अँगूठी है।
शु. – उसके पास बहुमूल्य अँगूठी है।
अ. – गाँव में कुत्ते रात भर चिल्लाते हैं।
शु. – गाँव में कुत्ते रात भर भौंकते हैं।
अ. – पेड़ों पर कोयल बोल रही है।
शु. – पेड़ पर कोयल कूक रही है।
अ. – वह प्रातःकाल के समय घूमने जाता है।
शु. – वह प्रातःकाल घूमने जाता है।
अ. – जज ने हत्यारे को मृत्यु दण्ड की सजा दी।
शु. – जज ने हत्यारे को मृत्यु दण्ड दिया।
अ. – वह विख्यात डाकू था।

शु. – वह कुख्यात डाकू था।
अ. – वह निरपराधी था।
शु. – वह निरपराध था।
अ. – आप चाहो तो काम बन जायेगा।
शु. – आप चाहें तो काम बन जायेगा।
अ. – माँ–बच्चा दोनोँ बीमार पड़ गयीँ।
शु. – माँ–बच्चा दोनोँ बीमार पड़ गए।
अ. – बेटी पराये घर का धन होता है।
शु. – बेटी पराये घर का धन होती है।
अ. – भक्तियुग का काल स्वर्णयुग माना जाता है।
शु. – भक्ति–काल स्वर्ण युग माना गया है।
अ. – बचपन से मैँ हिन्दी बोली हूँ।
शु. – बचपन से मैँ हिन्दी बोलती हूँ।
अ. – वह मुझे देखा तो घबरा गया।
शु. – उसने मुझे देखा तो घबरा गया।
अ. – अस्तबल मेँ घोड़ा चिँघाड़ रहा है।
शु. – अस्तबल मेँ घोड़ा हिनहिना रहा है।
अ. – पिँजरे मेँ शेर बोल रहा है।
शु. – पिँजरे मेँ शेर दहाड़ रहा है।
अ. – जंगल मेँ हाथी दहाड़ रहा है।
शु. – जंगल मेँ हाथी चिँघाड़ रहा है।
अ. – कृपया यह पुस्तक मेरे को दीजिए।
शु. – यह पुस्तक मुझे दीजिए।
अ. – बाजार मेँ एक दिन का अवकाश उपेक्षित है।
शु. – बाजार मेँ एक दिन का अवकाश अपेक्षित है।
अ. – छात्र ने कक्षा मेँ पुस्तक को पढ़ा।
शु. – छात्र ने कक्षा मेँ पुस्तक पढ़ी।
अ. – आपसे सदा अनुग्रहित रहा हूँ।
शु. – आपसे सदा अनुगृहीत हूँ।
अ. – घर मेँ केवल मात्र एक चारपाई है।
शु. – घर मेँ एक चारपाई है।
अ. – माली ने एक फूलोँ की माला बनाई।
शु. – माली ने फूलोँ की एक माला बनाई।
अ. – वह चित्र सुन्दरतापूर्ण है।
शु. – वह चित्र सुन्दर है।
अ. – कुत्ता एक स्वामी भक्त जानवर है।
शु. – कुत्ता स्वामिभक्त पशु है।
अ. – शायद आज आँधी अवश्य आयेगी।
शु. – शायद आज आँधी आये।
अ. – दिनेश सांयकाल के समय घूमने जाता है।
शु. – दिनेश सायंकाल घूमने जाता है।
अ. – यह विषय बड़ा छोटा है।
शु. – यह विषय बहुत छोटा है।
अ. – अनेकोँ विद्यार्थी खेल रहे हैँ।
शु. – अनेक विद्यार्थी खेल रहे हैँ।
अ. – वह चलता-चलता थक गया।
शु. – वह चलते-चलते थक गया।
अ. – मैँने हस्ताक्षर कर दिया है।
शु. – मैँने हस्ताक्षर कर दिये हैँ।
अ. – लता मधुर गायक है।
शु. – लता मधुर गायिका है।
अ. – महात्माओँ के सदोपदेश सुनने योग्य होते हैँ।
शु. – महात्माओँ के सदुपदेश सुनने योग्य होते हैँ।
अ. – उसने न्याधीश को निवेदन किया।
शु. – उसने न्यायाधीश से निवेदन किया।
अ. – हम ऐसा ही हूँ।
शु. – मैँ ऐसा ही हूँ।
अ. – पेड़ोँ पर पक्षी बैठा है।
शु. – पेड़ पर पक्षी बैठा है। या पेड़ोँ पर पक्षी बैठे हैँ।
अ. – हम हमारी कक्षा मेँ गए।
शु. – हम अपनी कक्षा मेँ गए।
अ. – आप खाये कि नहीँ?।
शु. – आपने खाया कि नहीँ?।
अ. – वह गया।
शु. – वह चला गया।
अ. – हम चाय अभी-अभी पिया है।
शु. – हमने चाय अभी-अभी पी है।
अ. – इसका अन्तःकरण अच्छा है।
शु. – इसका अन्तःकरण शुद्ध है।
अ. – शेर को देखते ही उसका होश उड़ गया।
शु. – शेर को देखते ही उसके होश उड़ गये।
अ. – वह साहित्यिक पुरुष है।
शु. – वह साहित्यकार है।
अ. – रामायण सभी हिन्दू मानते हैँ।
शु. – रामायण सभी हिन्दुओँ को मान्य है।

अ. – आज ठण्डी बर्फ मँगवानी चाहिए।
शु. – आज बर्फ मँगवानी चाहिए।
अ. – मैच को देखने चलो।
शु. – मैच देखने चलो।
अ. – मेरा पिताजी आया है।
शु. – मेरे पिताजी आये हैं।

• सामान्यतः अशुद्धि किए जाने वाले प्रमुख शब्द :
अशुद्ध — शुद्ध
अतिथी – अतिथि
अतिश्योक्ति – अतिशयोक्ति
अमावश्या – अमावस्या
अनुगृह – अनुग्रह
अन्तर्ध्यान – अन्तर्धान
अन्ताक्षरी – अन्त्याक्षरी
अनूजा – अनुजा
अन्धेरा – अँधेरा
अनेकों – अनेक
अनाधिकार – अनधिकार
अधिशाषी – अधिशासी
अन्तरगत – अन्तर्गत
अलोकित – अलौकिक
अगम – अगम्य
अहार – आहार
अजीविका – आजीविका
अहिल्या – अहल्या
अपरान्ह – अपराह्न
अत्याधिक – अत्यधिक
अभिशापित – अभिशप्त
अंतेष्टि – अंत्येष्टि
अकस्मात – अकस्मात्
अर्थात – अर्थात्
अनूपम – अनुपम
अंतर्रात्मा – अंतरात्मा
अन्विती – अन्विति
अध्यावसाय – अध्यवसाय
आभ्यंतर – अभ्यंतर
अन्वीष्ट – अन्विष्ट
आखर – अक्षर
आवाहन – आह्वान
आयू – आयु
आदेस – आदेश
अभ्यारण्य – अभयारण्य
अनुग्रहीत – अनुगृहीत
अहोरात्रि – अहोरात्र
अक्षुण्य – अक्षुण्ण
अनुसूया – अनुसूर्या
अक्षोहिणी – अक्षौहिणी
अँकुर – अंकुर
आहूति – आहुति
आधीन – अधीन
आशिर्वाद – आशीर्वाद
आद्र – आर्द्र
आरोग – आरोग्य
आक्रषक – आकर्षक
इष्ठ – इष्ट
इर्ष्या – ईर्ष्या
इस्कूल – स्कूल
इतिहासिक – ऐतिहासिक
इक्षा – ईक्षा
इप्सित – ईप्सित
इकट्ठा – इकट्ठा
इन्दू – इन्दु
ईमारत – इमारत
एच्छिक – ऐच्छिक
उज्वल – उज्ज्वल
उतरदाई – उत्तरदायी
उतरोत्तर – उत्तरोत्तर
उध्यान – उद्यान
उपरोक्त – उपर्युक्त
उपवाश – उपवास
उदहारण – उदाहरण
उलंघन – उल्लंघन
उपलक्ष – उपलक्ष्य
उन्नतिशाली – उन्नतिशील

उच्छ्वास – उच्छ्वास
उज्जयनी – उज्जयिनी
उदीप्त – उद्दीप्त
ऊधम – उद्यम
उछिष्ट – उच्छिष्ट
ऊषा – उषा
ऊखली – ओखली
उष्मा – ऊष्मा
उर्मि – ऊर्मि
उरु – उरू
उहापोह – ऊहापोह
ऊंचाई – ऊँचाई
ऊख – ईख
रिधि – ऋद्धि
एक्य – ऐक्य
एतरेय – ऐतरेय
एकत्रित – एकत्र
एश्वर्य – ऐश्वर्य
ओषध – औषध
ओचित्य – औचित्य
औधोगिक – औद्योगिक
कनिष्ट – कनिष्ठ
कलिन्दी – कालिन्दी
करूणा – करुणा
कविन्द्र – कवीन्द्र
कवियत्री – कवयित्री
कलीदास – कालिदास
कार्रवाई – कार्यवाही
केन्द्रिय – केन्द्रीय
कैलास – कैलाश
किरन – किरण
किर्या – क्रिया
किँचित – किँचित्
कीर्ती – कीर्ति
कुआ – कुँआ
कुटम्ब – कुटुम्ब
कुतुहल – कौतूहल
कुशाण – कुषाण
कुरूति – कुरीति
कुसूर – कसूर
कैकयी – कैकेयी
कोतुक – कौतुक
कोमुदी – कौमुदी
कोशल्या – कौशल्या
कोशल – कौशल
क्रति – कृति
क्रतार्थ – कृतार्थ
क्रतज्ञ – कृतज्ञ
कृत्घन – कृतघ्न
क्रत्रिम – कृत्रिम
खेतीहर – खेतिहर
गरिष्ट – गरिष्ठ
गणमान्य – गण्यमान्य
गत्यार्थ – गत्यर्थ
गुरू – गुरु
गूंगा – गूँगा
गोप्यनीय – गोपनीय
गूंज – गूँज
गौरवता – गौरव
गृहणी – गृहिणी
ग्रसित – ग्रस्त
गृहता – ग्रहीता
गीतांजली – गीतांजलि
गत्यावरोध – गत्यवरोध
गृहस्थि – गृहस्थी
गर्भिनी – गर्भिणी
घन्टा – घण्टा, घंटा
घबड़ाना – घबराना
चन्चल – चंचल, चञ्चल
चातुर्यता – चातुर्य, चतुराई
चाहरदीवारी – चहारदीवारी, चारदीवारी
चेत्र – चैत्र
तदानुकूल – तदनुकूल
तत्त्वाधान – तत्त्वावधान
तनखा – तनख्वाह

तरिका – तरीका
तखत – तख्त
तड़िज्योति – तड़िज्ज्योति
तिलांजली – तिलांजलि
तीर्थकंर – तीर्थंकर
त्रसित – त्रस्त
तत्व – तत्त्व
दंपति – दंपती
दारिद्रयता – दारिद्रय, दरिद्रता
दुख – दुःख
दृष्टा – द्रष्टा
दैहिक – दैहिक
दोगुना – दुगुना
धनाड़य – धनाढ्य
धुरंदर – धुरंधर
धैर्यता – धैर्य
ध्रष्ट – धृष्ट
झाँका – झाँका
तदन्तर – तदनन्तर
जरुरत – जरूरत
दयालू – दयालु
धुम्र – धूम्र
दुरुह – दुरूह
धोका – धोखा
नैसृगिक – नैसर्गिक
नाइका – नायिका
नर्क – नरक
संगृह – संग्रह
गोतम – गौतम
झुंपड़ी – झोंपड़ी
तस्तरी – तश्तरी
छुद्र – क्षुद्र
छमा,समा – क्षमा
तोल – तौल
जजर्र – जर्जर
जागृत – जाग्रत
श्रृगाल – शृगाल
श्रृंगार – शृंगार
गिध – गिद्ध
चाहिये – चाहिए
तदोपरान्त – तदुपरान्त
क्षुदा – क्षुधा
चिन्ह – चिह्न
तिथी – तिथि
तैय्यार – तैयार
धेनू – धेनु
नटिनी – नटनी
बन्धू – बन्धु
द्वन्द – द्वन्द्व
निरोग – नीरोग
निश्कलंक – निष्कलंक
निरव – नीरव
नैपथ्य – नेपथ्य
परिस्थिती – परिस्थिति
परलोकिक – पारलौकिक
नीतीज्ञ – नीतिज्ञ
नृसंस – नृशंस
न्यायधीश – न्यायाधीश
परसुराम – परशुराम
बढ़ाई – बड़ाई
प्रहलाद – प्रह्लाद
बुद्धवार – बुधवार
पुन्य – पुण्य
बृज – ब्रज
पिपिलिका – पिपीलिका
बैदेही – वैदेही
पुर्नविवाह – पुनर्विवाह
भीमसैन – भीमसेन
मच्छिका – मक्षिका
लखनउ – लखनऊ
मुहुर्त – मुहूर्त
निरसता – नीरसता
बुढ़ा – बूढ़ा
परमेस्वर – परमेश्वर
बहुब्रीह – बहुब्रीहि

नेत्रत्व – नेतृत्व
भीत्ति – भित्ति
प्रथक – पृथक
मंत्रि – मन्त्री
पर्गल्भ – प्रगल्य
ब्रहमान्ड – ब्रहमाण्ड
महात्म्य – माहात्म्य
ब्राम्हण – ब्राह्मण
मैथलीशरण – मैथिलीशरण
बरात – बारात
व्यावहार – व्यवहार
भेरव – भैरव
भगीरथी – भागीरथी
भेषज – भैषज
मंत्रीमंडल – मन्त्रिमण्डल
मध्यस्त – मध्यस्थ
यसोदा – यशोदा
विरहणी – विरहिणी
यायाबर – यायावर
मृत्यूलोक – मृत्युलोक
राज्यभिषेक – राज्याभिषेक
युधिष्ठर – युधिष्ठिर
रितीकाल – रीतिकाल
यौवनावस्था – युवावस्था
रचियता – रचयिता
लघुत्तर – लघूत्तर
रोहीताश्व – रोहिताश्व
वनोषध – वनौषध
वधु – वधू
व्याभिचारी – व्यभिचारी
सूश्रुषा – सुश्रूषा/शुश्रूषा
सौजन्यता – सौजन्य
संक्षिप्तिकरण – संक्षिप्तीकरण
संसदसदस्य – संसत्सदस्य
सतगुण – सद्गुण
सम्मती – सम्मति
संघठन – संगठन
संतती – संतति
समिक्षा – समीक्षा
सौँदर्यता – सौँदर्य/सुन्दरता
सौहार्द्र – सौहार्द
सहश्र – सहस्र
संगृह – संग्रह
संसारिक – सांसारिक
सत्मार्ग – सन्मार्ग
सदृश्य – सदृश
सदोपदेश – सदुपदेश
समरथ – समर्थ
स्वस्थ्य – स्वास्थ्य/स्वस्थ
स्वास्तिक – स्वस्तिक
समबंध – संबंध
सन्यासी – संन्यासी
सरोजनी – सरोजिनी
संपति – संपत्ति
समुंदर – समुद्र
साधू – साधु
समाधी – समाधि
सुहागन – सुहागिन
सप्ताहिक – साप्ताहिक
सानंदपूर्वक – आनंदपूर्वक, सानंद
समाजिक – सामाजिक
स्त्राव – स्राव
स्त्रोत – स्रोत
सारथी – सारथि
सुई – सूई
सुसुप्ति – सुषुप्ति
नयी – नई
नही – नहीँ
निरुत्साहित – निरुत्साह
निस्वार्थ – निःस्वार्थ
निराभिमान – निरभिमान
निरानुनासिक – निरनुनासिक
निरूत्तर – निरुत्तर
नींबू – नीबू
न्यौछावर – न्योछावर

नबाब – नवाब
निहारिका – नीहारिका
निशंग – निषंग
नुपुर – नूपुर
परिणित – परिणति, परिणीत
परिप्रेक्ष – परिप्रेक्ष्य
पश्चात्ताप – पश्चाताप
परिषद – परिषद्
पुनरावलोकन – पुनरवलोकन
पुनरोक्ति – पुनरुक्ति
पुनरोत्थान – पुनरुत्थान
पितावत् – पितृवत्
पक्षि – पक्षी
पूर्वान्ह – पूर्वाह्न
पुज्य – पूज्य
पूज्यनीय – पूजनीय
प्रगती – प्रगति
प्रज्ज्वलित – प्रज्वलित
प्रकृती – प्रकृति
प्रतीलिपि – प्रतिलिपि
प्रतिछाया – प्रतिच्छाया
प्रमाणिक – प्रामाणिक
प्रसंगिक – प्रासंगिक
प्रदर्शिनी – प्रदर्शनी
प्रियदर्शनी – प्रियदर्शिनी
प्रत्योपकार – प्रत्युपकार
प्रविष्ठ – प्रविष्ट
पृष्ट – पृष्ठ
प्रगट – प्रकट
प्राणीविज्ञान – प्राणिविज्ञान
पातंजली – पतंजलि
पौरुषत्व – पौरुष
पौर्वात्य – पौरस्त्य
बजार – बाजार
वाल्मीकी – वाल्मीकि
बेइमान – बेईमान
ब्रहस्पति – बृहस्पति
भरतरी – भर्तृहरि
भर्तसना – भर्त्सना
भागवान – भाग्यवान्
भानू – भानु
भारवी – भारवि
भाषाई – भाषायी
भिज्ञ – अभिज्ञ
भैय्या – भैया
मनुषत्व – मनुष्यत्व
मरीचका – मरीचिका
महत्व – महत्त्व
मँहगाई – मंहगाई
महत्वाकांक्षा – महत्त्वाकांक्षा
मालुम – मालूम
मान्यनीय – माननीय
मुकंद – मुकुंद
मुनी – मुनि
मुहल्ला – मोहल्ला
माताहीन – मातृहीन
मूलतयः – मूलतः
मोहर – मुहर
योगीराज – योगिराज
यशगान – यशोगान
रविन्द्र – रवीन्द्र
रागनी – रागिनी
रुठना – रूठना
रोहीत – रोहित
लोकिक – लौकिक
वस्तुयेँ – वस्तुएँ
वाँछनीय – वांछनीय
वित्तेषणा – वित्तैषणा
व्रतांत – वृतांत
वापिस – वापस
वासुकी – वासुकि
विधार्थी – विद्यार्थी
विदेशिक – वैदेशिक
विधी – विधि
वांगमय – वाङ्मय

वरीष्ठ – वरिष्ठ
विस्वास – विश्वास
विषेश – विशेष
विछिन्न – विच्छिन्न
विशिष्ठ – विशिष्ट
वशिष्ट – वशिष्ठ, वसिष्ठ
वैश्या – वेश्या
वेषभूषा – वेशभूषा
व्यंग – व्यंग्य
व्यवहरित – व्यवहृत
शारीरीक – शारीरिक
विसराम – विश्राम
शांती – शांति
शारांस – सारांश
शाषकीय – शासकीय
श्रोत – स्त्रोत
श्राप – शाप
शाबास – शाबाश
शर्बत – शरबत
शंशय – संशय
सिरीष – शिरीष
शक्तिशील – शक्तिशाली
शार्दुल – शार्दूल
शौचनीय – शोचनीय
शुरूआत – शुरुआत
शुरु – शुरू
श्राद – श्राद्ध
श्रृंग – शृंग
श्रृंखला – शृंखला
श्रृद्धा – श्रद्धा
शुद्धी – शुद्धि
श्रीमति – श्रीमती
श्मस्रु – श्मश्रु
षटानन – षडानन
सरीता – सरिता
सन्सार – संसार
संश्लिष्ठ – संश्लिष्ट
हरितिमा – हरीतिमा
ह्रदय – हृदय
हिरन – हरिण
हितेषी – हितैषी
हिँदु – हिंदू
ऋषिकेश – हृषिकेश
हेतू – हेतु।

वाच्य

वाच्य का अर्थ — बोलने का विषय।

क्रिया के जिस रूप से यह विदित हो कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव, उसे वाच्य कहते हैं।

⇒ हिन्दी में दो वाच्य होते हैं।

1- कर्तृवाच्य   2. अकर्तृवाच्य

1⇒:- कर्तृवाच्य ⇒:- जिस वाक्य में बिंदु वाक्य का 'कर्ता' होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे ⇒ रवि पुस्तक पढ़ता है

⇒ बच्चा सो रहा है।   ⇒ हम बाजार जाएँगे।

Note ⇒ कर्तृवाच्य में सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

2⇒ अकर्तृवाच्य ⇒:- जिस वाक्य में बिन्दु वाक्य का कर्ता न हो अथवा कर्ता गौण हो, उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं जैसे -

⇒ गीत राम से गाया गया।   ⇒ उससे उठा नहीं जाता।

अकर्तृवाच्य दो प्रकार के होते हैं —

1- कर्मवाच्य

2- भाववाच्य

1. कर्मवाच्य :- जहाँ वाच्य बिंदु वाक्य का 'कर्म' हो, वह वाच्य 'कर्मवाच्य' कहलाता है। जैसे - चित्र सुनीता द्वारा बनाया गया। = कपड़े गगन के द्वारा धोए गए। चित्र, कपड़े वाक्यों में केन्द्र बिंदु है अतः ये दोनों कर्मवाच्य है।

:- कर्मवाच्य में केवल सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

2. भाववाच्य :- जहाँ वाच्य बिंदु न तो 'कर्ता' हो और न ही 'कर्म' बल्कि क्रिया का भाव हो, उसे भाव वाच्य कहा जाता है। जैसे :- उससे बैठा गया। रोगी से उठा नहीं जाता। बूढ़े से चला नहीं जा रहा। इन वाक्यों में 'उठ' तथा 'चल' क्रियाएँ ही मुख्य हैं इसलिए ये दोनों भाववाच्य वाक्य है।

:- भाववाच्य में केवल अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

:- वाच्य परिवर्तन :-

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य — कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए —

~~1~~ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित कीजिए।

⇒ इस परिवर्तित क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया के रूप को कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया के काल, तथा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार मुख्य क्रिया के साथ जोड़ दीजिए। साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

⇒ कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ कोई विभक्ति लगी हो, तो उसे हटाकर 'से' / द्वारा / के द्वारा लगा दीजिए।

⇒ यदि कर्म के साथ भी किसी विभक्ति का प्रयोग किया गया हो, तो उसे भी हटा दीजिए।

उदाहरण ⇒ - कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1- अध्यापक जी हिंदी पढ़ा रहे थे।	= अध्यापक जी द्वारा हिंदी पढ़ाई जा रही थी।
2- अतिथि भोजन कर चुके हैं।	= अतिथियों के द्वारा भोजन किया जा चुका है।
3⇒ बच्चे गीत गा रहे होंगे।	= बच्चों से गीत गाया जा रहा होगा।
4⇒ सचिन ने सौ रन बनाए	= सचिन के द्वारा सौ रन बनाए गए।

⇒ कर्तृवाच्य से भाववाच्य ⇒ -

⇒ कर्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' लगा दीजिए।

⇒ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया म

⇒ उदाहरण ⇐ :-

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1. हमसे रोज नहाया जाता है।	= हम रोज नहाते हैं।
2. अब चला जाए	= अब चलें।
3. बच्चे से रोया नहीं जाता।	= बच्चा नहीं रोता।

⇒ कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य ⇐ :-

⇒ कर्ता के साथ लगे -से- द्वारा से द्वारा को हटा दीजिए

⇒ क्रिया को कर्तृवाच्य के अनुसार बदल दें।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1. सुनीता के द्वारा चित्र बनाए जाएंगे।	= सुनीता चित्र बनाएगी
2. पुनीत द्वारा पतंग उड़ाई जाती है।	= पुनीत पतंग उड़ाती है

⇒ भाववाच्य से कर्तृवाच्य ⇐

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1. बच्चों से शांत नहीं रहा जाता।	⇒ बच्चे शांत नहीं रह सकते
2. उठो, जरा टहला जाए।	⇒ उठो, जरा टहल ले।
3. रोगी से नहीं उठा जाता।	⇒ रोगी उठ नहीं सकता।

⇒ इस परिवर्तित क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया के रूप को कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया के काल, तथा कर्म के लिंग, वचन, (पुरुष के अनुसार मुख्य क्रिया के साथ जोड़ दीजिए।
साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

⇒ कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ कोई विभक्ति लगी हो, तो उसे हटाकर 'से'/द्वारा/के द्वारा लगा दीजिए।

⇒ यदि कर्म के साथ भी किसी विभक्ति का प्रयोग किया गया हो, तो उसे भी हटा दीजिए।

उदाहरण :- कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1- अध्यापक जी हिंदी पढ़ा रहे थे।	= अध्यापक जी द्वारा हिंदी पढ़ाई जा रही थी।
2- अतिथि भोजन कर चुके हैं।	= अतिथियों द्वारा भोजन किया जा चुका है।
3⇒ बच्चे गीत गा रहे होंगे।	= बच्चों से गीत गाया जा रहा होगा।
4⇒ सचिन ने सौ रन बनाए	= सचिन के द्वारा सौ रन बनाए गए।

⇒ कर्तृवाच्य से भाववाच्य :-

⇒ कर्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' लगा दीजिए।
⇒ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया का

-: वाच्य के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु :-

(i) कर्मवाच्य के प्रयोग-स्थल :-

कर्मवाच्य का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया गया है —

1- जब कर्त्ता अज्ञात न हो ; जैसे — सूचना भेजी जा चुकी है।

2- जब कर्त्ता को प्रकट करने की आवश्यकता न हो ; जैसे — अपराधी को ढूँढ़ा जा रहा है।

3- असमर्थता की स्थिति दर्शाने के लिए ; जैसे — आज देर तक नहीं काम नहीं किया जा सकेगा।

4- सूचना, विज्ञप्ति आदि में, जैसे — अपराधी को पेश किया जाए।

5- जहाँ कर्त्ता कोई सामान्य व्यक्ति न होकर सरकार, समिति, सभा, समाज आदि हो ; जैसे - सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों को सहायता दी जा रही है।

6- कानून या कार्यालयों की भाषा में ; जैसे — आपके प्रार्थना-पत्र को रद्द कर दिया गया है।

7- जहाँ आपके बिना चाहे कोई क्रिया अचानक हो गई हो ; जैसे — खिड़की का काँच टूट गया।

⇒ भाववाच्य के प्रयोग स्थल :-

⇒ भाववाच्य का प्रयोग प्राय: असमर्थता अथवा विवशता प्रकट करने के लिए या निषेधार्थ में होता है। जैसे — अब सोचा नहीं जाता। यहाँ तो खड़ा भी नहीं हुआ जाता।

⇒ जहाँ अनुमति, आज्ञा या इच्छा का बोध हो। जैसे — अब चला जाए। अब थोड़ा आराम किया जाए।

वाच्य

वाच्य का अर्थ — बोलने का विषय।

क्रिया के जिस रूप से यह विदित हो कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव, उसे वाच्य कहते हैं।

⇒ हिन्दी में दो वाच्य होते हैं।

1- कर्तृवाच्य 2. अकर्तृवाच्य

1⇒:- कर्तृवाच्य ⇒:- जिस वाक्य में बिंदु वाक्य का 'कर्ता' होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे ⇒ रवि पुस्तक पढ़ता है

⇒ बच्चा सो रहा है। ⇒ हम बाजार जाएँगे।

Note ⇒ कर्तृवाच्य में सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

2⇒ अकर्तृवाच्य ⇒:- जिस वाक्य में बिन्दु वाक्य का कर्ता न हो अथवा कर्ता गौण हो, उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं जैसे -

⇒ गीत राम से गाया गया। ⇒ उससे उठा नहीं जाता।

अकर्तृवाच्य दो प्रकार के होते हैं —

1.- कर्मवाच्य

2- भाववाच्य

1. कर्मवाच्य :- जहाँ वाच्य बिंदु वाक्य का 'कर्म' हो, वह वाच्य 'कर्मवाच्य' कहलाता है। जैसे - चित्र सुनीता द्वारा बनाया गया। = कपड़े गगन के द्वारा धोए गए। चित्र, कपड़े वाक्यों में केन्द्र बिंदु है अतः ये दोनों कर्मवाच्य है।

:- कर्मवाच्य में केवल सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

2. भाववाच्य :- जहाँ वाच्य बिंदु न तो 'कर्ता' हो और न ही 'कर्म' बल्कि क्रिया का भाव हो, उसे भाव वाच्य कहा जाता है। जैसे :- उससे बैठा गया। रोगी से उठा नहीं जाता। बूढ़े से चला नहीं जा रहा। इन वाक्यों में 'उठ' तथा 'चल' क्रियाएँ ही मुख्य हैं इसलिए ये दोनों भाववाच्य वाक्य है।

:- भाववाच्य में केवल अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

:- वाच्य परिवर्तन :-

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य — कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए —

~~1~~ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित कीजिए।

⇒ इस परिवर्तित क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया के रूप को कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया के काल, तथा कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार मुख्य क्रिया के साथ जोड़ दीजिए। साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

⇒ कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ कोई विभक्ति लगी हो, तो उसे हटाकर 'से' / द्वारा / के द्वारा लगा दीजिए।

⇒ यदि कर्म के साथ भी किसी विभक्ति का प्रयोग किया गया हो, तो उसे भी हटा दीजिए।

उदाहरण ⇒ - कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1- अध्यापक जी हिंदी पढ़ा रहे थे।	= अध्यापक जी द्वारा हिंदी पढ़ाई जा रही थी।
2- अतिथि भोजन कर चुके हैं।	= अतिथियों के द्वारा भोजन किया जा चुका है।
3⇒ बच्चे गीत गा रहे होंगे।	= बच्चों से गीत गाया जा रहा होगा।
4⇒ सचिन ने सौ रन बनाए	= सचिन के द्वारा सौ रन बनाए गए।

⇒ कर्तृवाच्य से भाववाच्य ⇒ -

⇒ कर्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' लगा दीजिए।

⇒ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया म

⇒ उदाहरण ⇐ :-

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1. हमसे रोज नहाया जाता है।	= हम रोज नहाते हैं।
2. अब चला जाए	= अब चलें।
3. बच्चे से रोया नहीं जाता।	= बच्चा नहीं रोता।

⇒ कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य ⇐ :-

⇒ कर्ता के साथ लगे -से- द्वारा से द्वारा को हटा दीजिए

⇒ क्रिया को कर्तृवाच्य के अनुसार बदल दें।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
1. सुनीता के द्वारा चित्र बनाए जाएंगे।	= सुनीता चित्र बनाएगी
2. पुनीत द्वारा पतंग उड़ाई जाती है।	= पुनीत पतंग उड़ाती है

⇒ भाववाच्य से कर्तृवाच्य ⇐

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
1. बच्चों से शांत नहीं रहा जाता।	⇒ बच्चे शांत नहीं रह सकते
2. उठो, जरा टहला जाए।	⇒ उठो, जरा टहल ले।
3. रोगी से नहीं उठा जाता।	⇒ रोगी उठ नहीं सकता।

⇒ इस परिवर्तित क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया के रूप को कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया के काल, तथा कर्म के लिंग, वचन, (पुरुष के अनुसार मुख्य क्रिया के साथ जोड़ दीजिए।
साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया में बदलिए।

⇒ कर्तृवाच्य के कर्ता के साथ कोई विभक्ति लगी हो, तो उसे हटाकर 'से'/द्वारा/के द्वारा लगा दीजिए।

⇒ यदि कर्म के साथ भी किसी विभक्ति का प्रयोग किया गया हो, तो उसे भी हटा दीजिए।

उदाहरण :- कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1- अध्यापक जी हिंदी पढ़ा रहे थे।	= अध्यापक जी द्वारा हिंदी पढ़ाई जा रही थी।
2- अतिथि भोजन कर चुके हैं।	= अतिथियों द्वारा भोजन किया जा चुका है।
3⇒ बच्चे गीत गा रहे होंगे।	= बच्चों से गीत गाया जा रहा होगा।
4⇒ सचिन ने सौ रन बनाए	= सचिन के द्वारा सौ रन बनाए गए।

⇒ कर्तृवाच्य से भाववाच्य :-

⇒ कर्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' लगा दीजिए।
⇒ कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर उसके साथ 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया का

-: वाच्य के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु :-

(i) कर्मवाच्य के प्रयोग-स्थल :-

कर्मवाच्य का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया गया है —

1- जब कर्त्ता अज्ञात न हो ; जैसे — सूचना भेजी जा चुकी है।

2- जब कर्त्ता को प्रकट करने की आवश्यकता न हो ; जैसे — अपराधी को ढूँढ़ा जा रहा है।

3- असमर्थता की स्थिति दर्शाने के लिए ; जैसे — आज देर तक नहीं काम नहीं किया जा सकेगा।

4- सूचना, विज्ञप्ति आदि में, जैसे — अपराधी को पेश किया जाए।

5- जहाँ कर्त्ता कोई सामान्य व्यक्ति न होकर सरकार, समिति, सभा, समाज आदि हो ; जैसे - सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों को सहायता दी जा रही है।

6- कानून या कार्यालयों की भाषा में ; जैसे — आपके प्रार्थना-पत्र को रद्द कर दिया गया है।

7- जहाँ आपके बिना चाहे कोई क्रिया अचानक हो गई हो ; जैसे — खिड़की का काँच टूट गया।

⇒ भाववाच्य के प्रयोग स्थल :-

⇒ भाववाच्य का प्रयोग प्राय: असमर्थता अथवा विवशता प्रकट करने के लिए या निषेधार्थ में होता है। जैसे — अब सोचा नहीं जाता। यहाँ तो खड़ा भी नहीं हुआ जाता।

⇒ जहाँ अनुमति, आज्ञा या इच्छा का बोध हो। जैसे — अब चला जाए। अब थोड़ा आराम किया जाए।

संधि

1. ' धनुष्टंकार ' में कौन- सी संधि हैं।
(A) विसर्ग (B) व्यंजन
(C) दीर्घ (D) यण (A)

2. ' मनोहर ' में कौन - सी संधि हैं?
(A) वृद्धि (B) व्यंजन
(C) विसर्ग (D) गुण (C)

3. ' दिग्दर्शक ' में कौन - सी संधि हैं?
(A) विसर्ग (B) वृद्धि
(C) अयादि (D) व्यंजन D

4. ' यद्यपि ' मे कौन - सी संधि हैं?
(A) यण (B) व्यंजन
(C) विसर्ग (D) दीर्घ (A)

5. किस शब्द में संधि नहीं संयोग है?
(A) दुष्कर्म (B) मात्राज्ञा
(C) उल्लेख (D) प्रतिज्ञा (D)

6. वृद्धि संधि का उदाहरण नहीं हैं?
(A) अभ्यागत (B) एकैक
(C) जलौध (D) महौषध (A)

7. ' भावुक' का संधि- विच्छेद किस क्रम में है?
(A) भा+ उक (B) भव+औक
(C) भौ+उक (D) भव+उक (C)

8. किस क्रम में सही मेल नहीं है?
(A) अच् + अन्त = अजन्त
(B) षट् + दर्शन = षटदर्शन
(C) चाचा + एरा = चचेरा
(D) अनु + अय = अन्वय (B)

9. किस क्रमांक में ' अधिष्ठाता ' का सही संधि - विच्छेद हैं?
(A) अधि+ ठाता (B) अधि + स्ठता
(C) अधि + स्ठाता (D)अधि + थाता (C)

10. व्यायाम में कौनसी संधि हैं?
(A) यण संध (B) गुण संधि
(C) वृद्धि संधि (D) अयादि संधि (A)

11. निम्नलिखित में से अयादि संधि का उदाहरण हैं?
(A) अन्वेषण (B) गायन
(C) विश्वामित्र (D) यद्यपि (B)

12. किस क्रमांक में ' वाक् + ईश ' की संधि हैं?
(A) वाकीश (B) वाकईश
(C) वाग्शीश (D) वागीश (D)

13. किस क्रमांक में विसर्ग संधि नहीं हैं?
(A) मनोयोग (B) रजोगुण
(C) नीरद (D) बहिरंग (C)

14. यदि विसर्ग के आगे च या छ हो तो विसर्ग का क्या हो जाता है?
(A) ष् (B) श् (C) स्
(D) विसर्ग मे कोई विकार नहीं होता (B)

15. ' उ +ऊ ' स्वरों का मेल किन शब्दों में हु आहै?
(A) गंगोर्मि (B) लघुर्मि
(C) भानुदय (D) गुरुपदेश (B)

16. ' गंगोदक ' में कौन सी संधि हैं?
(A) वृद्धि (B) गुण
(C) दीर्घ (D) व्यंजन (B)

17. ' निष्फल ' में कौन सी संधि हैं?
(A) विसर्ग (B) व्यंजन
(C) दीर्घ (D) यण (A)

18. ' न्यून' में कौन सी संधि हैं?
(A) यण (B) दीर्घ
(C) वृद्धि (D) अयादि (A)

19. ' वाग्दान ' मे कौन सी संधि हैं।
(A) वृद्धि (B) दीर्घ
(C) व्यंजन (D) विसर्ग (C)

20. ' गिरीश ' मे कौन सी संधि हैं।
(A) गुण (B) दीर्घ
(C)वृद्धि (D) यण (B)

21. ' परिच्छेद ' में कौनसी संधि हैं?
(A) व्यंजन (B) दीर्घ
(C) गुण (D) अयादि (A)

22. ' तद्रूप ' में कौन सी संधि हैं?
(A) यण (B) गुण
(C) व्यंजन (D) विसर्ग (C)

23. ' भानूदय' में कौन सी संधि हैं?
(A) यण (B) गुण
(C) व्यंजन (D)दीर्घ (D)

24. ' पावक ' में कौन सी संधि हैं?
(A) यण (B) अयादि
(C) व्यंजन (D) विसर्ग (B)

25. ' विपज्जाल ' में कौन सी संधि हैं?
(A) व्यंजन (B) विसर्ग
(C) गुण (D) यण (A)

26. ' प्रत्युपकार' में कौन सी संधि हैं?
(A) व्यंजन (B) विसर्ग
(C) गुण (D) यण (D)

27. ' नयन ' में कौनसी संधि हैं।
(A)अयादि (B) गुण
(C) वृद्धि (D) यण (A)

संधि

28. किस क्रम में संधि का गलत प्रयोग हु आहै?
(A) आश् + चर्य = आश्चर्य
(B) बहि: + कृत = बहिष्कृत
(C) नम: + ते = नमस्ते
(D) यजु: + वेद = यजुर्वेद (A)

29. ' वाड्मय ' में कौन सी संधि हैं?
(A) वृद्धि (B) व्यंजन
(C) विसर्ग (D) अयादि (B)

30. उद्धार ' में कौन सी संधि हैं?
(A) विसर्ग (B) अयादि
(C) व्यंजन (D) गुण (C)

31. ' नायक' में कौन सी संधि हैं?
(A) अयादि (B) यण
(C) गुण (D) विसर्ग (A)

32. ' उल्लास ' में कौन सी संधि हैं?
(A) विसर्ग (B) व्यंजन
(C) गुण (D) वृद्धि (B)

33. किस क्रमांक में यण संधि का नियम लागू होता है?
(A) शुभेच्छा (B) मात्रिच्छा
(C) स्वच्छाकाश (D) स्वेच्छा (B)

34. किस क्रमांक में संधि का सही विच्छेद नहीं है?
(A) वाग् + ईश = वगीश
(B) सत्+ मार्ग = सन्मार्ग
(C) अनु +छेद = अनुच्छेद
(D) अभि + सेक = अभिषेक (A)

35. ' सूर्योष्मा ' में किस संधि का नियम लागू होता है ?
(A) यश (B) गुण
(C)वृद्धि (D) अयादि (B)

36. उ +अ स्वरों का मेल किस शब्द में नहीं हु आहै?
(A) मध्वरि (B) स्वस्ति
(C) स्वेच्छा (D) मन्वंतर (C)

37. किस क्रमांक में संधि का सही विच्छेद नहीं हु आहै?
(A) मात्र + उपदेश = मात्रुपदेश
(B) अनु+ एषणा = अन्वेषण
(C) नारी + इच्छा = नारीच्छा
(D) पितृ + अनुमति = पित्रनुमति (A)

38. ' साध्वाचरण ' का संधि विच्छेद किस क्रम में है?
(A) साध+ चरण (B) साधव + चरण
(C) साधु + आचरण (D) साध+ आचरण (C)

39. किस क्रम में वृद्धि संधि नहीं हैं?
(A) स्व+ ऐच्छिक = स्वैच्छिक
(B) महा + ऊर्जा = महोर्जा
(C) जल+ ओक = जलौक
(D) वसुधा +एव = वसुधैव (B)

40. किस क्रम में अयादि संधि नहीं है?
(A) नि+ अस्त= न्यस्त
(B) श्रौ + अक = श्रावक
(C) गो + इन्द्र = गविंद्र
(D) गै +अन = गायन (A)

41. किस क्रम में सही संधि नहीं हु ईहैं?
(A) वाग + वैभव (B) वाक + वैभव
(C) वाक् + वैभव (D) वाग् + वैभव (C)

42. किस क्रम में सही संधि नहीं हु ईहैं?
(A) षट्+ मुख = षण्मुख
(B) जगत् + माता = जगन्माता
(C) तीर्थंकर
(D) भवत्+ निष्ठ = भवनिष्ट (D)

43. किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं हु आहै?
(A) किम् + वा = किंवा
(B) अभि + सेक = अभिषेक
(C) राम + आयण = रामायण
(D) सम् + तोष = संतोष (C)

44. किस क्रम में यण संधि नहीं हैं?
(A) स्वागत (B) मात्रानंद
(C) यद्यपि (D) महर्षि (D)

45. किस क्रमांक में ' मधु + आचार्य ' की संधि हैं?
(A) मध्वाचार्य (B) मधुचार्य
(C) माधवाचार्य (D) माधोचार्य (A)

46. किस क्रम में सही संधि विच्छेद हु आ है?
(A) अनु + वति (B) पवि+ इत्र
(C) प्रति + ऊह (D) अनु + दित (C)

47. अयादि संधि में ' ऐ' के बदले क्या हो जाता हैं?
(A) अय् (B) आय्
(C) अव् (D) आव् (B)

48. ' बहिरंग ' शब्द में कौनसी संधि हैं ?
(A) व्यंजन संधि (B) दीर्घ संधि
(C) विसर्ग संधि (D) गुण संधि (C)

49. 'अनुष्ठान' का संधि विच्छेद होगा -
(A) अनु+ ठान (B) अनु + स्थान
(C) अनु+ थान (D) अनु: + ठान (B)

50. किस क्रम में उचित संधि विच्छेद

संधि

नहीं हैं?

(A) सम् + विधान (B) धनम् + जय

(C) सद् + निधि (D) दिक् + नाथ (C)

51. कौनसा क्रम उचित प्रतीत होता हैं?

(A) परम् + तु = परन्तु

(B) वाड + मय = वाड्मय

(C) षट् + मुख = षटमुख

(D) सद् + वेग = सदवेग (A)

52.अधरोष्ट -

(A) अधर + औष्ट (B) अधर + उष्ट

(C) अधर + ओष्ट (D) अध: + रोष्ट (C)

53. किस क्रम में संधि का सही प्रयोग नहीं हु आहै?

(A) शब्द + इतर= शब्देतर

(B) अनु+दित = अनुदित

(C) रजनी + ईश = रजनिश

(D) अहम् + कार = अहंकार (B)

54. द् के पहले यदि ऋ स्वर आए तो ' द् ' किसमें बदल जाता हैं?

(A) त् (B) ण् (C) न् (D) म् (B)

55. इन में स्वर संधि का उदाहरण हैं

(A) संयोग (B) मनोहर

(C) नमस्कार (D) पवन (D)

56. इत्यादि -

(A) इत् + यादि (B) इति + यादि

(C) इत् + आदि (D) इति + आदि (D)

57. इन में से कौन सा वृद्धि संधि का उदाहरण नहीं हैं?

(A) सदैव (B) जलौघ

(C) गुरुपदेश (D) परमौदार्य (C)

58. रामायण -

(A) राम: + अण (B) राम + आयन

(C) राम + अयन (D) रामा + यन् (C)

59. निम्न में से दीर्घ संधि युक्त पद कौन सा हैं?

(A) महर्षि (B) देवेन्द्र

(C) सुर्योदय (D) दैत्यारि (D)

60. सचिवालय -

(A) सचिव + आलय (B) सचिव +लय

(C) सचि + वालय (D) सचि + आलय (A)

61. निरर्थक -

(A) निर् + अर्थक (B) निर: + अर्थक

(C) नि: + अर्थक (D) निरा + अर्थक (C)

62. धरेश -

(A) धरा: + अश (B) धर + ईश

(C) धरा + ईश (D) धरा + इश (C)

63. व्याकुल -

(A) वि+ आकुल (B) व्या + कुल

(C) व्या + आकुल (D) वि+ याकुल (A)

64. महोष्ण -

(A) महु + उष्ण (B) महा+ ऊष्ण

(C) महो + उष्ण (D) महा + उष्ण (D)

65. मुनीन्द -

(A) मुनी + इन्द्र (B) मुनी + ईन्द्र

(C) मुनि + इन्द्र (D) मुनीन + इन्द्र (C)

66. परोपकार में प्रयुक्त संधि का नाम है?

(A) विसर्ग संधि (B) गुण संधि

(C) वृद्धि संधि (D) यण संधि (B)

67. अन्विति -

(A) अनु + अति (B) अनु + इति

(C) अन + अति (D) अन + इति

68. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें विसर्ग संधि हैं

(A) उज्ज्वल (B) निश्चल

(C) राजेन्द्र (D) वागीश (B)

69. तपोवन में प्रयुक्त संधि का नाम है

(A) स्वर संधि (B) व्यंजन संधि

(C) विसर्ग संधि (D) इन में से कोई नहीं (C)

70. स्वागत में प्रयुक्त संधि का नाम है?

(A) व्यंजन संध (B) यण संधि

(C) दीर्घ संधि (D) वृद्धि संधि (B)

71. पित्रादेश -

(A) पितृ: + आदेश (B) पितृ + आदेश

(C) पिता + आदेश (D) पितृ + अ + आदेश (B)

72. दिगम्बर में प्रयुक्त संधि का नाम है?

(A) स्वर संधि (B) व्यंजन संधि

(C) विसर्ग संधि (D) इन में से कोई नहीं (B)

73. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें विसर्ग संधि हैं?

(A) रमेश (B) रामायण

(C) तपोगुण (D) सदाचार (C)

74. प्रत्युपकार का सही संधि विच्छेद हैं?

(A) पत् + उपकार (B) प्रती + उपकार

(C) प्रति +उपकार (D) प्रति + अपकार (C)

संधि

75. व्युह -

(A) व्य + ऊह (B) वि: + यूह

(C) वि+ ऊह (D) वि+ युह (C)

76. यशोदा मे प्रयुक्त संधि का नाम है -

(A) स्वर संधि (B व्यंजन संधि

(C) विसर्ग संधि (D) इन में से कोई नहीं (C)

77. आद्यन्त -

(A) आदि + अन्त (B) आद्य + अन्त

(C) आद्य: + अन्त (D) आदि + यन्त (A)

78. निम्नलिखित में से एक शब्द संधि की दृष्टि से अशुद्ध है, उस शब्द का चयन कीजिए?

(A)तथैव (B) तथापि

(C) तदाकार (D) तदोपरान्त (D)

79. काव्योर्मि -

(A) काव्य + ओर्मि (B) काव्य + ऊर्मि

(C) कवि + उर्मि (D) का + व्योर्मि (B)

80. स्वर संधि का उदाहरण कौन सा है?

(A) वागीश (B) दिगंबर

(C) नयन (D) दुष्कर्म (C)

81. सत्याग्रह -

(A) सत्या + अग्रह (B) सत+ आग्रह

(C) सत्य + ग्रह (D) सत्य + आग्रह (D)

82. व्यर्थ शब्द में किन वर्णों की संधि हुई है?

(A) इ+ अ (B) इ+ उ

(C) इ + ए (D) ई+ अ (A)

83. व्यग्र -

(A) वि + अग्र (B) वि+ यग्र

(C) व् + अग्र (D) व् + यग्र (A)

84. महोदय का सही संधि - विच्छेद हैं?

(A) महो + दय (B) महा + ओदय

(C) महान + उदय (D) महा + उदय (D)

85. वसुधैव

(A) वसुधा + एव (B) वसुधा + इव

(C) वसुधा: + ईव (D) वसुधा + ईव (A)

86. तन्मय का सही संधि - विच्छेद हैं -

(A) तन् + मय (B) तम् + अय

(C) तत् + मय (D) तन् + अमय (C)

87. वध्वैश्वर्य -

(A) वध्या + ऐश्वर्य (B) वध + ऐश्वर्य

(C) वधु + ऐश्वर्य (D) वधू + ऐश्वर्य (D)

88. उद्धरण-

(A) उत् + हरण (B) उत् + अण

(C) उत् + धरण (D) उघ्द + रण (A)

89. नीरोग में प्रयुक्त संधि का नाम है?

(A) स्वर संधि (B) व्यंजन संधि

(C) विसर्ग संधि (D) इनमें से कोई नहीं (C)

90. निर्जन में प्रयुक्त संधि का नाम है?

(A) स्वर संधि (B) व्यंजन संधि

(C)विसर्ग संधि (D)इन में से कोई नहीं (C)

—: समास :—

समास :— 'संक्षेप' या प्रक्रिया में संक्षिप्तीकरण दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुये नये 'सार्थक' शब्द को समास कहते हैं।

समस्त-पद या सामासिक शब्द/पद :— समास के नियमों से बना शब्द समस्त-पद या सामासिक शब्द कहलाता।

समास-विग्रह :— समस्त पद के सभी पदों को अलग-अलग किये जाने की प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है।

⇒ समास में प्राय: दो पद होते हैं — (1) पूर्व पद (2) उत्तर पद

⇒ समास के छ: (6) भेद होते हैं —

- पूर्व पद प्रधान — अव्ययीभाव समास
- उत्तर पद प्रधान — तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु
- दोनों पद प्रधान — द्वंद्व
- दोनों पद अप्रधान — बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

(1) **अव्ययीभाव समास** —: जिस समास का पहला पद अव्यय तथा प्रधान हो

⇒ पहचान — पहला पद अनु, आ, अति, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि।

(2) **तत्पुरुष समास** —: जिस समास में बाद का अथवा उत्तर पद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

⇒ **उदाहरण** — राजकुमार, धर्मग्रन्थ, रचनाकार।

⇒ **तत्पुरुष समास के भेद** :— विभक्तियों के नामों के अनुसार छह (6) भेद हैं —

(i) **कर्म (द्वितीया) तत्पुरुष** :— इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है

⇒ **उदाहरण** — गगनचुंबी, यशप्राप्त, चिड़ीमार, ग्रामगत, रथचालक, जेबकतरा

(ii) **करण (तृतीया) तत्पुरुष** :— इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है।

⇒ **उदाहरण** — करुणापूर्ण, भयाकुल, रेखांकित, शोकग्रस्त, मदांध, मनचाहा, सूररचित

(iii) संप्रदान (चतुर्थी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — प्रयोगशाला, स्नानघर, यज्ञशाला, गौशाला, देशभक्ति, डाकगाड़ी, लक्ष्मी

(iv) आपादान (पंचमी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें आपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — धनहीन, पथभ्रष्ट, पदच्युत, देशनिकाला, ऋणमुक्त, गुणहीन, जलहीन

(v) संबंध (षष्ठी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — राजपुत्र, राजाज्ञा, पराधीन, राजकुमार, देशरक्षा, शिवालय, गृहस्वामी

(vi) अधिकरण (सप्तमी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — शोकमग्न, पुरुषोत्तम, आपबीती, गृहप्रवेश, लोकप्रिय, धर्मवीर।

③ कर्मधारय समास ⇒:- जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।

⇒ उदाहरण — चरणकमल, नवलता, कमलनयन, प्राणप्रिय, चंद्रमुख, मृगनयन, देहलता

④ द्विगु समास ⇒:- जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है। इसमें समूह या समाहार का ज्ञान प्राप्त होता है।

⇒ उदाहरण — सप्तसिंधु, दोपहर, त्रिलोक, चौराहा, नवरात्र, सप्तऋषि, सप्तर्षि, पंचमढ़ी

⑤ द्वंद्व समास ⇒:- जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता हो वह द्वंद्व समास कहलाता है।

⇒ Note — दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिन्ह (–) का प्रयोग होता है।

⇒ उदाहरण — नदी-नाले, पाप-पुण्य, सुख-दुःख, गुण-दोष, खरा-खोटा।

⑥ बहुव्रीहि समास ⇒:- जिस समस्त-पद में कोई पद प्रधान नहीं होता, दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, उसमें बहुव्रीहि समास होता है

⇒ उदाहरण — लंबोदर, दशानन, चक्रपाणि, महावीर, चतुर्भुज, विषधर, मृत्युंजय।

वर्णमाला

— एक नजर —

अतिमहत्वपूर्ण प्रश्न

* हिन्दी वर्णमाला मे कुल वर्णो की संख्या (52) है। (52)
* हिन्दी वर्णमाला मे कुल स्वरो की संख्या (13) है। (11)
* हिन्दी वर्णमाला मे मात्राओ की कुल संख्या (10) है। (10)
* हिन्दी वर्णमाला मे आयोगवाह की संख्या 2 है। (2) (अं, अः)
* हिन्दी वर्णमाला में मूल स्वर की संख्या 4 है। (अ इ उ तह)
* हिन्दी वर्णमाला मे व्यंजनो की संख्या 33 है। (33) छोड़कर (ड़, ढ़)
* हिन्दी वर्णमाला मे स्पर्शी व्यंजनो की संख्या 25 है।
* हिन्दी वर्णमाला मे वर्गों की संख्या व्यंजन मे 5 है। (क च ट त प)
* हिन्दी वर्णमाला मे अन्तःस्थ व्यंजनो की संख्या 4 है। (य र ल व)
* हिन्दी वर्णमाला मे ऊष्म व्यंजनो की संख्या 4 है। (श ष स ह)
* हिन्दी वर्णमाला मे संयुक्त व्यंजनो की संख्या 4 है। (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)
* हिन्दी वर्णमाला मे उत्क्षिप्त/ द्विस्पृष्ट/ गौण व्यंजनो की संख्या 2 है। (ड़, ढ़)
* हिन्दी वर्णमाला मे अर्धस्वर य, व को कहा जाता है।
* हिन्दी वर्णमाला मे र लुण्ठित तथा ल पार्श्व व्यंजन है।
* हिन्दी वर्णमाला मे उच्चारण/स्वर तन्त्रियो के आधार पर क्रमश कंठ्य, तालु, मूर्धा, दन्त्य और ओष्ठ्य से क्रमशः क, च, ट, त प। वर्ग बोले जाते है।

* अघोष — वर्गों के पहले व दूसरे वर्ण तथा श, ष, स है।
* सघोष — वर्गों के तीसरे, चौथे व पांचवे वर्ण, तथा स्वर तथा य, र, ल, व तथा ह।
* अल्पप्राण - 1ला 3रा व पाँचवा वर्ण + य, र, ल, व।
* महाप्राण - 2रा व 4था वर्ण तथा श, ष, स, ह तथा स्वर 11

Note ↦ आगे जो नोट्स दिया गया है उसके नम्बर अर्थात संख्याओ की तरफ ध्यान न दे और न ही सन्देह करे यहा से उपरोक्त संख्या पर ध्यान दे यहा दी हुयी संख्याएं सही है न की आगे दी हुयी 11

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

Topic वर्णमाला Date 19/09/2018

भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर (Syllable) और अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण (Letter) है। राम शब्द में दो (2) अक्षर (रा, म) एवं 4 वर्ण (र् आ म् अ) है।

वर्णमाला (Alphabet) → वर्ण - भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। इस ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं।

वर्णमाला → वर्णों के व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

मानक हिन्दी वर्णमाला के मूलतः हिन्दी में उच्चारण के आधार पर 52 वर्ण (10 स्वर + 42 व्यंजन) एवं लेखन के आधार पर 52 वर्ण (13 स्वर + 35 व्यंजन + 4 संयुक्त व्यंजन) है।

स्वर → अ, आ इ ई उ ऊ (ऋ) ए ऐ ओ औ (अं) (अः)
[कुल = 10 + (3) = 13]

व्यंजन → क वर्ग → क ख ग घ ङ
च वर्ग → च छ ज झ ञ
ट वर्ग → ट ठ ड (ड़) ढ (ढ़) ण } द्विगुण व्यंजन - ड़ ढ़
त वर्ग → त थ द ध न
प वर्ग → प फ ब भ म
अंतस्थ - य र ल व
ऊष्म - श ष स ह
संयुक्त व्यंजन - क्ष त्र ज्ञ श्र (कुल - 4)
(क + ष) (त् + र) (ज् + ञ) (श् + र)

अरबी-फारसी : ऑ, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ इनका प्रयोग अब कम हो गया है।
अंग्रेजी : ऑ (अर्द्ध चन्द्रबिन्दु वाले वर्ण)

Note → (1) वर्णों की गणना दो आधार पर की जाती है उच्चारण व लेखन।
उच्चारण के आधार पर की गई वर्ण गणना को ज्यादा उपयुक्त माना जाता है।

(2) उच्चारण के आधार पर हिन्दी में वर्णों की कुल संख्या 52 [10 स्वर + 42 व्यंजन {35 हिन्दी के मूल व्यंजन + 2 आगत व्यंजन (क़, फ़)}]

NEEL KAMAL

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

क्ष त्र ज्ञ श्र एकल व्यंजन नहीं है; ये संयुक्त व्यंजन है।

③ लेखन के आधार पर हिन्दी में वर्णों की कुल संख्या 55 है। इसमें उन सभी पूर्ण वर्णों को शामिल किया जाता है जो लेखन या मुद्रण में प्रयोग में आते है।

स्वर (Vowels) स्वतन्त्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण 'स्वर' कहलाते है। परम्परागत रूप से इनकी संख्या (13) मानी गई है। उच्चारण की दृष्टि से इनमें केवल 10 ही स्वर है - [अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ]।

स्वरों का वर्गीकरण → ① मात्रा / उच्चारण-काल के आधार पर :

ह्रस्व स्वर → जिनके उच्चारण में कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है (अ इ उ)

दीर्घ स्वर → जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से ज्यादा समय लगता है (दो मात्रा का समय) लगता है (आ ई ऊ ए ऐ ओ औ आँ)।

प्लुत स्वर → जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है किसी को पुकारने में या नाटक के संवादों में इसका प्रयोग किया जाता है (रा ऽऽऽऽ म)।

② जीभ के प्रयोग के आधार पर → अग्र स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग काम करता है (इ ई ए ऐ)।

मध्य स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ का मध्य भाग काम करता है (अ)।

पश्च स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में जीभ पश्च भाग काम करता है (आ उ ऊ ओ औ आँ)।

③ मुख-द्वार (मुख-विवर) के खुलने के आधार पर →

विवृत (Open) → जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार पूरा खुलता है (आ)।

अर्ध-विवृत (Half-Open) → जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा खुलता है (अ, ऐ, औ, ऑ)।

अर्ध-संवृत (HalfClose) → जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार आधा बन्द रहता है (ए, ओ)।

संवृत (close) → जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार लगभग बंद रहता है (इ, ई, उ, ऊ)।

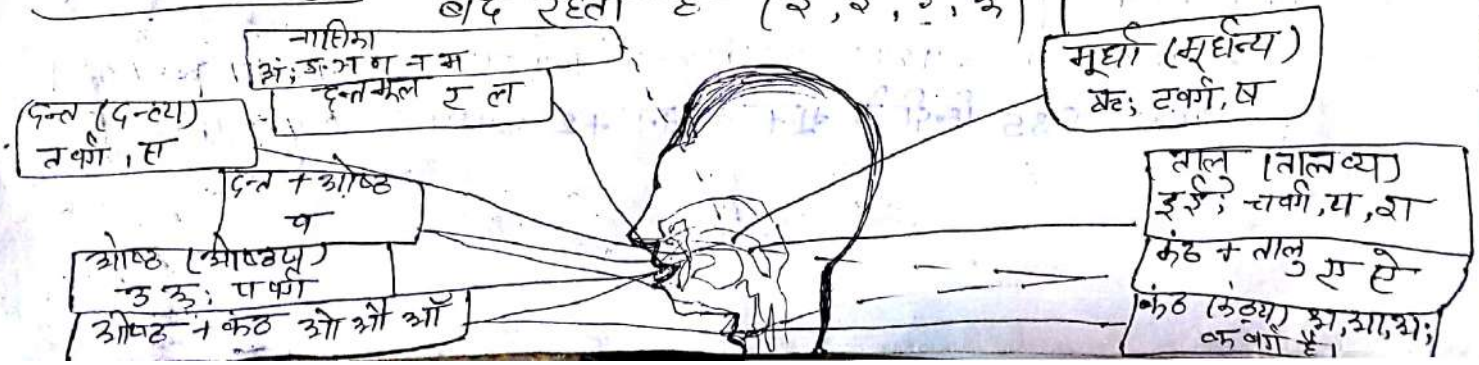

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

Topic ____________ Date ____________

ओठों की स्थिति के आधार पर → (4)
अवृतमुखी → जिन स्वरों के उच्चारण में वृतमुखी या गोलाकार नहीं होते हैं (अ, आ, इ, ई, ए, ऐ)।
वृतमुखी → जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ वृतमुखी या गोलाकार होते हैं (उ ऊ ओ औ ऑ)।

(5) हवा के नाक व मुँह से निकलने के आधार पर →
मौखिक स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में हवा केवल मुँह से निकलती है (निरनुनासिक) (अ, आ, इ, आदि)।
अनुनासिक स्वर → जिन स्वरों के उच्चारण में हवा मुँह के साथ-साथ नाक से भी निकलती है (अँ आँ इँ आदि)।

(6) घोषत्व के आधार पर → घोष का अर्थ है स्वरतंत्रियो में श्वास का कंपन। स्वरतंत्री में जब कंपन होता है तो सघोष ध्वनि उत्पन्न होती है। सभी स्वर 'सघोष' ध्वनियाँ होती हैं।

व्यंजन (Consonants) → स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण 'व्यंजन' कहलाते हैं। परंपरागत रूप से व्यंजनों की संख्या 33 मानी जाती है। द्विगुण व्यंजन ड़, ढ़ को जोड़ देने पर इनकी संख्या 35 हो जाती है।

व्यंजनों का वर्गीकरण → (1) स्पर्श व्यंजन → जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा फेफड़ों से निकलते हुए मुँह के किसी स्थान-विशेष — कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या होठ — का स्पर्श करते हुए निकले।

कंठ्य — क ख ग घ ङ
तालव्य — च छ ज झ ञ
मूर्धन्य — ट ठ ड ढ ण
दन्त्य — त थ द ध न
ओष्ठ्य — प फ ब भ म

Note → (1) कुछ विद्वान च वर्ग को स्पर्श-संघर्षी भी मानते हैं।
घोषत्व के आधार पर — घोष का अर्थ है स्वरतंत्रियों में हवा का कंपन।

NEEL KAMAL

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

अघोष → जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियों में कम्पन न हो
(हर वर्ग का पहला और दूसरा व्यंजन)

सघोष → जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियों में कम्पन हो।
(हर वर्ग का 3रा, 4था और 5वाँ व्यंजन)

(3) प्राणत्व के आधार पर - यहाँ प्राण का अर्थ हवा से है

अल्प प्राण :- जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकले
(हर वर्ग का पहला तीसरा व पाँचवा)

महाप्राण :- जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकले
(हर वर्ग का 2रा व चौथा व्यंजन)

(ख) अन्तस्थ व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण पारम्परिक वर्णमाला के बीच होता है अर्थात स्वरों और व्यंजनों के बीच की स्थिति हो।

वर्ण	उच्चारण स्थान	
य	तालव्य	सघोष, अल्पप्राण
र	वर्त्स्य	
ल	वर्त्स्य	
व	दन्तोष्ठ्य ऊपर के दाँत + निचला ओंठ।	

(ग) ऊष्म/संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु मुख में किसी स्थान विशेष पर घर्षण/रगड़ खा कर निकले और ऊष्मा या गर्मी पैदा करे।

वर्ण	उच्चारण स्थान	
श	तालव्य	अघोष महाप्राण
ष	मूर्धन्य	
स	वर्त्स्य	
ह	कण्ठ	

(घ) उत्क्षिप्त (ड़ ढ़) - जिनके उच्चारण में जीभ पहले ऊपर उठाकर पहले मूर्धा का स्पर्श करे और फिर झटके के साथ नीचे को आये। (विकसित व्यंजन है)।

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

:व्यंजन - सन्धि :-

1- वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन :-

क् का ग् होना :
दिक् + गज = दिग्गज
दिक् + अंत = दिगंत
दिक् + विजय = दिग्विजय
वाक् + ईश = वागीश

च् का ज् होना :
अच् + अंत = अजंत
अच् + आदि = अजादि

ट् का ड् होना :
षट् + आनन = षडानन
षट् + रिपु = षड्रिपु

त् का द् होना :
भगवत् + भजन = भगवद्भजन
उत् + योग = उद्योग
सत् + भावना = सद्भावना
सत् + गुण = सद्गुण

प् का ब् होना :
अप् + ज = अब्ज
अप् + धि = अब्धि
सुप् + अंत = सुबंत

2- वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवे वर्ण में परिवर्तन :-

क् का ङ् होना : वाक् + मय = वाङ्मय
ट् का ण् होना : षट् + मुख = षण्मुख
त् का न् होना : उत् + मत्त = उन्मत्त
तत् + मय = तन्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3- 'छ' संबंधी नियम :- किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का मेल 'छ' से होने पर 'छ' से पहले 'च्' जोड़ दिया जाता है; जैसे—

स्व + छंद = स्वच्छंद
परि + छेद = परिच्छेद
अनु + छेद = अनुच्छेद
वि + छेद = विच्छेद

4- त् संबंधी नियम :-
उत् + लास = उल्लास
तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लेख = उल्लेख

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

(ii) 'त्' के बाद यदि 'ज', 'झ' हो तो 'त्' 'ज्' में बदल जाता है।

सत् + जन = सज्जन
जगत् + जननी = जगज्जननी
विपत् + जाल = विपज्जाल
उत् + ज्वल = उज्ज्वल
उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) 'त्' के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त्' क्रमशः 'ट' 'ड्' में बदल जाता है।

बृहत् + टीका = बृहट्टीका
उत् + डयन = उड्डयन

(iv) 'त' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है।

उत् + श्वास = उच्छ्वास
सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(v) 'त' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है।

उत् + चारण = उच्चारण
उत् + चरित = उच्चरित
जगत् + छाया = जगच्छाया
सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(vi) 'त' के बाद 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध्' हो जाता है।

तत् + हित = तद्धित
उत् + हार = उद्धार
उत् + हत = उद्धत
उत् + हृत = उद्धृत

5. 'न' संबंधी नियम → यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है।

परि + नाम = परिणाम
प्र + नाम = प्रणाम
प्र + माण = प्रमाण
राम + अयन = रामायण
भूष + अन = भूषण

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

(iii) विसर्ग का 'श्' हो जाता है :— यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च', 'छ' या 'श' हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है।

नि: + चिंत = निश्चिंत दु: + शासन = दुश्शासन
नि: + छल = निश्छल दु: + चरित्र = दुश्चरित्र

(iv) विसर्ग का 'ष्' हो जाता है :— विसर्ग के पहले 'इ', 'उ' और बाद में 'क', 'ख', 'ट', 'ठ', 'प', 'फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

नि: + कपट = निष्कपट नि: + ठुर = निष्ठुर
नि: + कंटक = निष्कंटक नि: + प्राण = निष्प्राण
धनु: + टंकार = धनुष्टंकार नि: + फल = निष्फल

⇒ Note अपवाद - दु: + ख = दु:ख

(v) विसर्ग का 'स्' हो जाता है :— विसर्ग के बाद यदि 'त' या 'स' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है।

नम: + ते = नमस्ते नि: + तेज = निस्तेज
मन: + ताप = मनस्ताप नि: + संताप = निस्संताप
दु: + तर = दुस्तर दु: + साहस = दुस्साहस

(vi) विसर्ग का लोप हो जाना :—

(i) यदि विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उसके पहले स्वर दीर्घ हो जाता है।

नि: + रोग = नीरोग
नि: + रस = नीरस

(ii) यदि विसर्ग में पहले 'अ' या 'आ' हो और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

अत: + एव = अतएव

(vii) ⇒ विसर्ग में परिवर्तन न होना :— यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो तथा बाद में 'क' या 'प' हो तो विसर्ग में परिवर्तन नहीं होता है।

प्रात: + काल = प्रात:काल अंत: + पुर = अंत:पुर
अंत: + करण = अंत:करण अंध: + पतन = अंधपतन

⇒ Note अपवाद :- नम: एवं पुर: में विसर्ग का स् हो जाता है।

नम: + कार = नमस्कार पुर: + कार = पुरस्कार

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

—: विसर्ग-सन्धि :—

विसर्ग-सन्धि: विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं।

नि: + आहार = निराहार
दु: + आशा = दुराशा
तप: + भूमि = तपोभूमि
मन: + योग = मनोयोग

विसर्ग-सन्धि के प्रमुख नियम :—

(i) विसर्ग का 'ओ' हो जाता है : यदि विसर्ग के पहले 'अ' और बाद में 'अ' अथवा तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व', 'ह' हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

मन: + अनुकूल = मनोनुकूल
तप: + बल = तपोबल
तप: + भूमि = तपोभूमि
पय: + धन = पयोधन
मन: + योग = मनोयोग

अध: + गति = अधोगति
वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध
पय: + द = पयोद
मन: + रथ = मनोरथ
मन: + हर = मनोहर

★ अपवाद: पुन: एवं अंत: में विसर्ग का र् हो जाता है।

पुन: + मुद्रण = पुनर्मुद्रण
पुन: + जन्म = पुनर्जन्म
अंत: + धान = अंतर्धान
अंत: + अग्नि = अंतरग्नि

(ii) विसर्ग का 'र्' हो जाता है :— यदि विसर्ग के पहले 'अ', 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में 'आ' या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई हो तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है।

नि: + आशा = निराशा
नि: + धन = निर्धन
नि: + बल = निर्बल
नि: + जन = निर्जन

आशी: + वाद = आशीर्वाद
दु: + बल = दुर्बल
दु: + जन = दुर्जन
नि: + धारण = निर्धारण
दु: + उपयोग = दुरुपयोग
बहि: + मुख = बहिर्मुख

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

⑥ 'म' संबंधी नियम :—

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है।

सम् + कलन = संकलन
सम् + गति = संगति
सम् + चय = संचय
परम् + तु = परंतु
सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' से हो तो 'म' सदैव अनुस्वार ही होता है।

सम् + योग = संयोग
सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + लाप = संलाप
सम् + विधान = संविधान
सम् + शय = संशय
सम् + सार = संसार
सम् + हार = संहार

(iii) 'म' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता है।

सम् + मान = सम्मान
सम् + मति = सम्मति

Note :- आजकल सुविधा के लिए पंचमाक्षर के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग होता है।

7. 'स' संबंधी नियम :— 'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है।

बि + सम = बिषम
बि + साद = बिषाद
सु + समा = सुषमा

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

समास

समास :- 'संक्षेप' या प्रक्रिया में संक्षिप्तीकरण दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुये नये 'सार्थक' शब्द को समास कहते हैं।

समस्त-पद या सामासिक शब्द/पद :- समास के नियमों से बना शब्द समस्त-पद या सामासिक शब्द कहलाता।

समास-विग्रह :- समस्त पद के सभी पदों को अलग-अलग किये जाने की प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है।

⇒ समास में प्राय: दो पद होते हैं — ① पूर्व पद ② उत्तर पद

⇒ समास के छ: (6) भेद होते हैं —

पूर्व पद प्रधान — अव्ययीभाव समास
उत्तर पद प्रधान — तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु
दोनों पद प्रधान — द्वंद्व
दोनों पद अप्रधान — बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

① **अव्ययीभाव समास** —: जिस समास का पहला पद अव्यय तथा प्रधान हो

⇒ पहचान — पहला पद अनु, आ, अति, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि।

② **तत्पुरुष समास** —: जिस समास में बाद का अथवा उत्तर पद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

⇒ **उदाहरण** — राजकुमार, धर्मग्रन्थ, रचनाकार।

⇒ **तत्पुरुष समास के भेद** :— विभक्तियों के नामों के अनुसार छह (6) भेद हैं —

(i) **कर्म (द्वितीया) तत्पुरुष** -: इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है।

⇒ **उदाहरण** — गगनचुंबी, यशप्राप्त, चिड़ीमार, ग्रामगत, रथचालक, जेबकतरा

(ii) **करण (तृतीया) तत्पुरुष** -: इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है।

⇒ **उदाहरण** — करुणापूर्ण, भयाकुल, रेखांकित, शोकग्रस्त, मदांध, मनचाहा, सूररचित

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM

(iii) संप्रदान (चतुर्थी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — प्रयोगशाला, स्नानघर, यज्ञशाला, गौशाला, देशभक्ति, डाकगाड़ी, रथयात्री

(iv) आपादान (पंचमी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें आपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने का भाव) लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — धनहीन, पथभ्रष्ट, पदच्युत, देशनिकाला, ऋणमुक्त, गुणहीन, जलहीन

(v) संबंध (षष्ठी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — राजपुत्र, राजाज्ञा, पराधीन, राजकुमार, देशरक्षा, शिवालय, गृहस्वामी

(vi) अधिकरण (सप्तमी) तत्पुरुष ⇒:- इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है।

⇒ उदाहरण — शोकमग्न, पुरुषोत्तम, आपबीती, गृहप्रवेश, लोकप्रिय, धर्मवीर।

③ कर्मधारय समास ⇒:- जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।

⇒ उदाहरण — चरणकमल, मनकमलता, कमलनयन, प्राणप्रिय, चंद्रमुख, मृगनयन, देहलता

④ द्विगु समास ⇒:- जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु समास कहलाता है। इसमें समूह या समाहार का ज्ञान प्राप्त होता है।

⇒ उदाहरण — सप्तसिंधु, दोपहर, त्रिलोक, चौराहा, नवरात्र, सप्तऋषि / सप्तर्षि, पंचमढ़ी

⑤ द्वंद्व समास ⇒:- जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता हो वह द्वंद्व समास कहलाता है।

⇒ Note — दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिन्ह (–) का प्रयोग होता है।

⇒ उदाहरण — नदी-नाले, पाप-पुण्य, सुख-दुःख, गुण-दोष, खरा-खोटा।

⑥ बहुव्रीहि समास ⇒:- जिस समस्त-पद में कोई पद प्रधान नहीं होता, दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, उसमें बहुव्रीहि समास होता है।

⇒ उदाहरण — लंबोदर, दशानन, चक्रपाणि, महावीर, चतुर्भुज, विषधर, मृत्युंजय।

DOWNLOADED FROM WWW.CAREERWILL.COM